दुनिया मेरी अनुभव आपके

अपने जीवन से सीखे अनुभव अच्छे हो या बुरे

(कविता संग्रह)

प्रशांत अग्रवाल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Prashant Agrawal 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-105-7

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: November 2025

प्रिय पाठको हम यहां आपके कुछ ऐसे कविताओं के विषय लाए हैं जो कहीं ना कहीं तो आपकी जिंदगी से जुड़ी हैं। तो वही कुछ कविताएँ ऐसी हैं जो शायद आपको कुछ सवालों से तलाशने में मदद करेंगी। वही कुछ ऐसी कविताएं ऐसी है | जो आपको जिंदगी को जीने के अंदाज सिखा सकती है क्योंकि कहीं ना कहीं हम आज के भाग दौड़ भरे जीवन में कहीं ना कहीं हम खुद के अस्तित्व को खोते जा रहे हैं अगर आपको यह पसंद आती है तो अपनी राय हमें जरूर दे ताकी हम इसका फिर एक नया संस्करण लाये।

लेखक

प्रशांत अग्रवाल

अनुक्रमणिका\

ज़िंदगी कभी आसान नही होती 1
फिर भी ये जमाना मुझे अपना नही लगता 3
कभी सोचा नही था मै इतनी दूर तक चल पाऊँगा 5
पर नादान परिंदे को आजादी अच्छी लगती है 7
जब से चले है मेरे कदम रुके ही नही 9
हर बार हमे जीने को ज़रूरते ज़रूरी नही 11
जीने के लिए कुछ तो हमेशा ही बाकी रहता है 13
काश उस वक़्त मे खुद को जाना होता 15
यहाँ कुछ तो बेहतर मिल ही जायेगा 17
मुझे जीने को किसी बहाने की ज़रूरत नही 19
कैसा अजीब सपनों का सौदा किया है 21
पर किस्मत को कैसे बदल सकते है 23
कोई इंसान कभी खुद से नही बदलता 25
यहाँ जब बारी अपनी आती है तो भूल जाते है 27
नफरत मे इंसान इंसानियत भी भूल जाता है 29
तो कल हवा बन कही और उड़ जाऊँगा 31
अब मुझे पिछला कुछ भी याद नही 33
बेशक जमाने से उम्र थोड़ी कम है 35
पर उन्हें यादों से अलविदा नही कर पायेंगे 37
यहाँ मै खुद को किसी तरह समझा भी लूँ, ... 39
देख अभी सवेरा होने वाला है 41

जो दुनियाँ मे अपना रास्ता खुद बनाता है 43
मेरा खुद का ठिकाना नही अब तक 46
क्यूँ शब्दों को हवाओं मे नही गुजने देते 48
सोच को तो आजाद रखा जा सकता है 50
दुआओं मे क्या रखा है 52
माँ वो शब्द जो बच्चा पहली बार बोलता है 54
हवाओं के साथ मै रुख अपना बदल रहा हूँ 56
मसला ये नही युद्ध मे हार मिली या जीत 58
अकेला आया है तू अकेला तुझको जाना है 60
जो जैसी सोच रखे उसे वैसा ही अच्छा लगता है 62
बाकी इंसान तो मै भी मस्त मलंग सा हूँ 64
यहाँ कभी बारिशें बेमौसम नही होती 66
रुका तो जाना मै बहुत आगे निकल आया हूँ 68
सफर में मजा आज है 70
जब हम इंसान सिर्फ खिलौने है 73
पहले खुद को बेहतर बनाना पड़ता है 75
हर रोज मेरे दिल मे एक ख्याल आता है 77
किताबों तले वो नाजुक कंधा झुका जा रहा है 79
मै बात कुछ अपनी तो कुछ इस दुनियाँ की करता हूँ 81
बस सही वक़्त का थोड़ा इंतजार करना होगा 83
पर कुछ फैसले ले पाता वो हक ना मिले 85
पर जिम्मेदारी हमेशा बड़ी ही मिली है 87
जिन्दा रहने तक जिन्दा दिखना भी ज़रूरी है 89

उसका कितने प्रतिशत सच कर पाऊँगा मै 91
क्या करूँ मुझे इंसानी बोली नही आती... 93
तो जबाब भी हमे ही तलाशने होंगे... 95
जो समंदर को सीमाओं मे बांधना चाहते है 97
कौन होगा जो मुझे मेरी ज़िंदगी से मिला पायेगा..................................... 99
मुझे तो हमेशा से किनारा ही अच्छा लगता है 101
और ख्वाहिश चाँद की करता हूँ... 103
मै सच मे गलत हूँ या किसी का ख्याल गंदा है 105
इस बार मैं खोया तो खुद को ढूंढ नही पाऊँगा.................................... 107
फिर मुझे कभी काश कहने का मौका न मिले 109
बचपन का हर मंजर अच्छा लगता है.. 111
अपनी एक कोशिश तो कर सकता हूँ मै 113
जीने को एक वजह भी मिले तो काफी है 115
क्या इस ज़िंदगी का हिसाब दे पाओगे 117
बेखबर ये हवाएं बेखौफ बहती है यहाँ.. 119
आज की लड़की हवा मे उड़ना जानती है 121
जीने का ये हुनर बड़ी मुश्किल से सीखा है 123
जब ज़िंदगी आज और इसी वक़्त मे है 125
बस मेरे ये रास्ते बदलते रहते है.. 127
मेरी ये ज़िंदगी एक काहानी है... 129
तो इसमें गलत क्या है.. 131
कुछ नही बस उम्र का तकादा है साहब... 133
पर हमेशा इनमें कुछ अधूरा रह जाता है... 135

दिल मे बातों का दरिया बन रखे है 137
पर मै खुश रहने के बहाने बना लेता हूँ 140
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो छुट ही जायेगा 142
मेरे ये कदम तो सिर्फ चलना जानते है 144
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ 146
मै अपना सारा वक़्त लोगोँ के लिए गवां दिया 149
ये मेरी ज़िंदगी है किसी की जागीर थोड़ी है 151
उसने आँखे भी धोयी और चश्मा भी बदला है 153
यहाँ भाग दौड़ वाला जमाना जब से शुरु हुआ 155
हमारी भाषा हमारी संस्कृति की पहचान है 157
जमाने ने मारा है या ये जज्बात खुद मर जाते है 159
अगर मेरे शब्द बेहतर है तो मै बेहतर हूँ 161
चलो हमराही अब साथ चले 163
बाकी अब दुनियाँ मे हर चीज बिकती है 165
मै अपनी बनाई ठोकर से खुद को गिरा बैठा 167
वक़्त तो लगता है वक़्त के साथ ढलने मे 169
नदी वजूद खो देती है समंदर मे मिल जाने से 171

ज़िंदगी कभी आसान नही होती

ज़िंदगी कभी आसान नही होती,
उसे बस आसान बनाना पड़ता है |

कभी कुछ गम छुपा कर हमको,
भीड़ के बीच मुस्कुराना पड़ता है |

कभी कुछ रिश्तें बचाने को हमे,
अपना सर भी झुकाना पड़ता है |

ये सवाल यहाँ जटिल ही होते है,
धैर्य से जबाब तलाशना पड़ता है |

माफी के लायक नही गलतियाँ,
फिर भी हमे माफ करना पड़ता है |

दूर तो किसी को जाना ही नही,
वक़्त आने पर जाना तो पड़ता है |

या तो कोई वादा करना नही है,
किया है तो निभाना भी पड़ता है |

मंजिल खुद चलकर नही आती,
हमे उसके करीब जाना पड़ता है |

प्यार सिर्फ नजरों से नही होता,
उसे एहसास भी कराना पड़ता है |

मुस्कुराने को वजह काफी नही,
हमे खुद से ही मुस्कुराना पड़ता है |

ज़िंदगी कभी आसान नही होती,
उसे बस आसान बनाना पड़ता है |

फिर भी ये जमाना मुझे अपना नही लगता

जमाने मे जमाने का बनकर देखा मैंने,
फिर भी ये जमाना मुझे अपना नही लगता |

यहाँ जब सच की आवाज सुनाने निकला,
मै जाना झूठ के अलावा कुछ नही बिकता |

यहाँ प्रेम भी सिर्फ किताबों मे बाकी है,
अब तो नफरत के सिवा कुछ नही दिखता |

यहाँ अब इंसान गिरगिट जैसे बन रहे,
किसी का अब असली चेहरा नही दिखता |

इस जमाने ने काफी रास्ते बदल दिये,
जिसने दिखाये थे वो जमाना नही मिलता |

इसके लिए दिल की आवाज दबा दी,
जमाना तो मिला पर मेरा दिल नही मिलता |

ख्वाहिशे दाव पर लगा दी जमाने को,
फिर भी ख्वाबो वाला जमाना नही मिलता |

जमाने के लिए मैं खुद को बदल दिया,
कम्बख्त फिर भी ये जमाना नही बदलता |

मै कई ठोकर खाकर गिरा इसके लिए,
मै संभल जाता वो कभी हाथ नही मिलता |

आखिर फिर क्यूँ हम सुने जमाने की,
जो रोकता तो है पर कभी साथ नही चलता |

जमाने मे जमाने का बनकर देखा मैंने,
फिर भी ये जमाना मुझे अपना नही लगता |

कभी सोचा नही था मै इतनी दूर तक चल पाऊँगा

मैंने शुरुवाती ज़िंदगी ए सफर मे घुटने टेक दिये,
कभी सोचा नही था मै इतनी दूर तक चल पाऊँगा |

कभी आँसू जिसकी पलको पर हमेशा रहते थे,
कभी नही सोचा था इस दुनियाँ से लड़ भी पाऊँगा |

जो ख्वाब मेरे लिए महज एक सपना लगते थे,
कभी नही सोचा था मै उनके करीब भी जा पाऊँगा |

बचपन मे जो किताबे मुझे समझ नही आती थी,
कभी सोचा ही नही मै अपनी किताब लिख पाऊँगा |

यहाँ बचपन की जिम्मेदारियों मे हर शौक गवाये,
नही सोचा था उनके बिना भी मै कभी जी पाऊँगा |

मै नही जानता की मेरा यहाँ किरदार कैसा होगा,
इससे ज्यादा खुद को और बेहतर नही बना पाऊँगा |

बड़ी मुश्किल से दुनियाँ की भीड़ खुद को ढूंढे है,
शायद इस बार खोया तो खुद से मिल नहीं पाऊँगा |

मैंने मेरे दिल की भी सुनना छोड़ दिया नादान है,
मै जितनी उड़ान भरूँ पर चाँद तो नही छू पाऊँगा |

मेरे लिए मेरा सफर मेरा बनाया रास्ता अच्छा है,
मै अपना जितना भी वक़्त चाहूँ यहाँ गुजार पाऊँगा |

यहाँ मैंने वक़्त का हाथ थामा बस चलता गया,
वो मुझे जो रास्ते दिखायेगा मै बस चलता जाऊँगा |

मैंने शुरुवाती ज़िंदगी ए सफर मे घुटने टेक दिये,
कभी सोचा नही की मै इतनी दूर तक चल पाऊँगा |

पर नादान परिंदे को आजादी अच्छी लगती है

इस जमाने ने मेरी हदो की सीमाये बना दी,
पर नादान परिंदे को आजादी अच्छी लगती है |

क्यूँ परवाह हो जमाने की क्यूँ इसकी सुनु,
मुझे तो बस मेरे दिल की बाते अच्छी लगती है |

हर बार सिर्फ मै सही हूँ कोई ज़रूरी नही,
मैंने अपनी गलतियों से काफी चीजें सीखी है |

अच्छा सोचने के लिए दिल साफ रखना,
मन खराब हो तो वह सोच भी खराब लगती है |

खामोशी अच्छी थी जब तक सवाल नही,
बोलना पड़ता है क्योंकि जबाब देना ज़रूरी है |

यहाँ खामोश रहकर जमाने को सुन रहा हूँ,
कुछ लिखने को सबसे पहले पढ़ना ज़रूरी है |

मै अपनी पहली कोशिश पर हार कैसे मानू,
जीत को आखिर तक ये जंग लड़ना ज़रूरी है |

जो कोई ना हिला सकें बुनियाद मजबूत हो,
छत टिकती है जब तक ये दीवारे खड़ी रहती है |

जितना हो ज़िंदगी मे खुद को आजाद रखे,
आजादी मे ज़िंदगी हर हाल मे बेहतर लगती है |

बेशक मै सागर की जैसा शान्त ही रहता हूँ,
पर तोड़ दी सीमाये जब चीजें हद से गुजरती है |

इस जमाने ने मेरी हदो की सीमाये बना दी,
पर नादान परिंदे को आजादी अच्छी लगती है |

जब से चले है मेरे कदम रुके ही नही

जब से चले है मेरे कदम रुके ही नही,
अगर ये रुक जाते तो बात कुछ और होती |

मेरे लव कभी कुछ कह ही नही पाये,
यह कुछ कह पाते तो बात कुछ और होती |

मुझे यहाँ कुछ रास्ते समझ ना आये,
मै समझ पाता मेरी मंजिल कुछ और होती |

यहाँ मौसम तो कई बार सुहाने हुए है,
थोड़ी बारिश होती तो बात कुछ और होती |

मै चलते चलते थककर आज बैठा हूँ,
पहले ही थम जाता तो बात कुछ और होती |

मैंने आज अपनी आवाज पहचानी है,
पहले पहचान लेते तो बात कुछ और होती |

अब माफ करने से भी क्या फायदा,
अगर पहले किया होता तो बात कुछ होती |

मै तो एक इंतजार भी नही कर पाया,
काश थोड़ा करते तो बात कुछ और होती |

मैंने यहाँ कई सवाल उलझे छोड़ दिये,
जबाब मिल जाता तो बात कुछ और होती |

मै कब से अंधेरो मे यहाँ फिरता रहा,
रोशनी मिल जाती तो बात कुछ और होती |

जब से चले है मेरे कदम रुके ही नही,
अगर ये रुक जाते तो बात कुछ और होती |

हर बार हमे जीने को ज़रूरते ज़रूरी नही

क्यूँ ना छोड़ दे ज़रूरतो के लिए जीना,
हर बार हमे जीने को ज़रूरते ज़रूरी नही |

ज़रूरत पड़ने पर यहाँ बोलना पड़ता है,
देखे कही मेरी आवाज अभी दबी तो नही |

ख्वाबो को काफी वक़्त जाया किये है,
कहीं ख्वाब इस ज़िंदगी से ज्यादा तो नही |

मंजिल मिली पर फिर एक नया सफर,
मंजिल से ज्यादा कीमती ये सफर तो नही |

क्यूँ हम ही परवाह इस दुनियाँ की करे,
हमसे भी ज्यादा ज़रूरी कोई दुनियाँ नही |

एक शख़्स के लिए तुम दीवाने बन गये,
जो तुझे चाहे क्या वो तेरे लिए ज़रूरी नही |

क्या तुम्हें विश्वास को कसमें ज़रूरी है,
तेरी जुबां से ज्यादा ये कसमें ज़रूरी नही |

सपने तो खुली आँखो से देख सकते है,
सपनों के लिए इन रातों की ज़रूरत नही |

यहाँ तुझे खुद से ही खुद को बचाना है,
तुम कीमती हो खुद खो देना ये सही नही |

यहाँ तुम्हें मुस्कुराहट के साथ जीना है,
ये तेरी हो या किसी और की ज़रूरी नही |

क्यूँ ना छोड़ दे ज़रूरतो के लिए जीना,
हर बार जीने को ज़रूरते ज़रूरी तो नही |

जीने के लिए कुछ तो हमेशा ही बाकी रहता है

ज़िंदगी मे खत्म होने जैसा कुछ नही होता,
जीने के लिए कुछ तो हमेशा ही बाकी रहता है |

यहाँ कोई भी ये रास्ता आखिरी नही होता,
बस मोड़ आने पर वो हर बार बदलता रहता है |

प्रेम मे दिल टूट जाए ये कहना गलत होगा,
वह आपको ज़िंदगी के नये अंदाज सिखाता है |

तू ये मत सोचना की ज़िंदगी सिर्फ तेरी है,
तेरी हर साँस पर कई लोगों का नाम लिखा है |

तुम उसके लिए कभी कभी मुस्कुरा लेना,
जो तुम्हारी मुस्कुराहट को देखकर मुस्कुराता है |

बिना चाँद के भी कभी अंधेरा नही होता,
यह आसमान तो इन तारों से जगमगाता रहा है |

बुरे ख्याल आये अपने दोस्तों से मिलना,
जिन्हें हमेशा ही तुमसे मिलने इंतजार रहता है |

क्या हुआ आज तुम पहली बार हार गये,
एक बार जीतने को इंतजार तो करना पड़ता है |

ऐसा ख्याल आये तो माँ बाप को देखना,
उन्होंने ज़िंदगी का कीमती हिस्सा तुझे दिया है |

ज़िंदगी मे खुद को एक दूसरा मौका देना,
ये वो मौका है जो तेरी ज़िंदगी बदल सकता है |

ज़िंदगी मे खत्म होने जैसा कुछ नही होता,
जीने के लिए कुछ तो हमेशा ही बाकी रहता है |

काश उस वक़्त मे खुद को जाना होता

लोगों पर इतना वक़्त बर्बाद किये,
काश उस वक़्त मे खुद को जाना होता |

दावा करते हो दुनियाँ समझने का,
काश आईने मे खुद को पहचाना होता |

तू हाल ए दिल सबका जानता है,
काश कभी अपने दिल को जाना होता |

क्यूँ औरों की कामयाबी से जले,
काश तूने खुद को लायक बनाया होता |

ये वक़्त नही मिलता आसानी से,
काश तूने अपने लिए इसे चुराया होता |

कुछ ना पाने जैसा कुछ भी नही,
एक बार खुद को आजमाया तो होता |

ज़िंदगी मे यहाँ सबने कुछ खोया,
कोशिश करते कुछ तो पाया भी होता |

खुद ही सारे फैसले करते रहे तुम,
कभी इस जुबाँ से कुछ तो बताया होता |

इतने सवालों मे खुद को घेरे तुम,
कभी यहाँ एक सवाल सुलझाया होता |

इतना वक़्त तुमने लोगों को दिया,
काश उस वक़्त मे खुद को बनाया होता |

लोगों पर इतना वक़्त बर्बाद किये,
काश उस वक़्त मे खुद को जाना होता |

यहाँ कुछ तो बेहतर मिल ही जायेगा

मै अगर दुनियाँ मे ढूँढने निकलूँ,
यहाँ कुछ तो बेहतर मिल ही जायेगा |

समंदर की तलाश करते करते,
एक दरिया तो यहाँ मिल ही जायेगा |

यहाँ कुछ पल आँखे बंद रखूँ,
यहाँ एक ख्वाब ज़रूर दिख जायेगा |

मै काफी वक़्त गवा दिया यहाँ,
पर एक बेहतर रोज मेरा भी आयेगा |

मै अगर दिल से कोशिश करूँ,
आज नही तो कल बदलाव आयेगा |

मुझे तो जिंदादिली से जीना है,
तभी तो मेरा किरदार नजर आयेगा |

मैंने कविता भी ऐसी लिखी है,
जो पढ़ेगा कुछ सीखकर ही जायेगा |

मै नये रास्तो से नही घबराउंगा,
यहाँ एक रास्ता मंजिल तक जायेगा |

अब वक़्त हासिल करने का है,
जो चाहा है वो मुझे मिल ही जायेगा |

मेरी कविता कोई ना भी समझे,
कोई तो होगा जो इसे समझ पायेगा |

मै अगर दुनियाँ मे ढूँढने निकलूँ,
यहाँ कुछ तो बेहतर मिल ही जायेगा |

मुझे जीने को किसी बहाने की ज़रूरत नही

ज़िंदगी मे इतना तो जीना तो आ गया है,
मुझे जीने को किसी बहाने की ज़रूरत नही |

यहाँ जब तक मेरे कदम मेरे साथ रहते है,
मुझे चलने को किसी साथ की ज़रूरत नही |

कैसा ये साथ जो सिर्फ रोशनी मे ही दिखे,
मुझे ऐसी किसी भी परछाई की ज़रूरत नही |

मैंने सीख लिया है गमो मे भी मुस्कुराना,
मुझे हर बार ये आँसू बहाने की ज़रूरत नही |

मैंने इतना काबिल बना लिया खुद को,
अब मुझे कही हाथ फैलाने की ज़रूरत नही |

ज़िंदगी को इतना अनुभव तो किया है,
एक विषय पर लिखना ही मेरी ज़रूरत नही |

वो इंसान जो कई मुश्किलों से लड़ा है,
उसे एक मुश्किल से घबराने की ज़रूरत नही |

अब मैंने खुद को नदी जैसा बना लिया,
इस ज़िंदगी को अब ठहराव की ज़रुरत नही |

मेरा जो आज है मै बस उसमे जी रहा हूँ,
मै अब भी पुरानी यादों मे जियूँ ज़रूरत नही |

मैंने यहाँ सपने देखना भी छोड़ दिया है,
जो सच ही न हो ऐसे सपनों की ज़रूरत नही |

ज़िंदगी मे इतना तो जीना तो आ गया है,
मुझे जीने को किसी बहाने की ज़रूरत नही |

कैसा अजीब सपनों का सौदा किया है

क्यूँ नीदें बेच दी सपनों के खातिर,
कैसा अजीब सपनों का सौदा किया है |

कभी अगर तेरे सपने बिखर गये,
क्या होगा उस वक़्त तूने कभी सोचा है |

होता है सपनों के बिखरने का दर्द,
एक बार नही मैंने यह कई बार सोचा है |

फिर भी देख रहा हूँ मै नया ख्वाब,
नींदों से बेहतर तो मुझे ख्वाब लगता है |

यहाँ इसलिए मै अंधेरों मे चला था,
रोशनी का सही अंदाजा तो पता चलता है |

बेशक रास्ते कभी खत्म नही होते,
यहाँ एक रास्ता जो हमेशा खुला रहता है |

यहाँ सब खत्म होने जैसा कुछ नही,
उम्मीदों मे कुछ हमेशा ही बाकी रहता है |

यकीन मानों ये सोच सच कर देगी,
जिंदा रहने तक हर सपना जिंदा होता है |

मै ऐसी किस्मत को मानता ही नही,
जिसने मुझे हर पहले कदम पर रोका है |

मै नही कहता हर सपना सच होगा,
पर मैंने आगे का भी बहुत कुछ सोचा है |

क्यूँ नीदें बेच दी सपनों के खातिर,
कैसा अजीब सपनों का सौदा किया है |

पर किस्मत को कैसे बदल सकते है

हम चाहें जितनी कोशिश कर ले,
पर किस्मत को कैसे बदल सकते है |

फैसला चाहें जो हो उनका होगा,
हम तो बस इंतजार ही कर सकते है |

जिन रास्तों मे मंजिल थी ही नही,
वो मंजिलों तक कैसे पहुँच सकते है |

यहाँ जो प्रेम सिर्फ एकतरफा है,
मिलन की उम्मीद कैसे कर सकते है |

कुछ जख्म जिंदगीभर ना भरते,
हम तो बस मरहम ही लगा सकते है |

हर बार ये चीजें सही नही होती,
हम सिर्फ उन्हें बेहतर कर सकते है |

ज़िंदगी को थोड़ा रोचक बनाये,
इसके साथ दीवानगी कर सकते है |

ये ज़िंदगी यहाँ बहुत मुश्किल है,
हम चाहें इसे आसान कर सकते है |

कुछ तो नजरंदाज कर सकते है,
काफी कुछ है जोकि भूला सकते है |

हाँ मै किस्मत नही बदल सकता,
पर अपना आज तो बदल सकते है |

हम चाहें जितनी कोशिश कर ले,
पर किस्मत को कैसे बदल सकते है |

कोई इंसान कभी खुद से नही बदलता

कोई इंसान कभी खुद से नही बदलता,
हर बदलाव का कारण ये जमाना ही रहा है |

इंसान का दिल तो हमेशा ही नरम रहा,
वो पत्थर भी यहाँ ठोकर खाकर ही बना है |

अगर आँसू आँखो मे रुके है अब तक,
ज़रूर ज़िंदगी मे किसी खास को खोया है |

इन आँखो ने सपने देखने छोड़ दिये है,
शायद कोई एक ही सपना बार बार टूटा है |

उसने मजाक करना छोड़ दिया है अब,
यहाँ वो खास शख़्स जब से उससे रूठा है |

जिनके साथ बचपन गुजरा नही मिलते,
वे लोग जब से मैंने अपना मकान बदला है |

दौलत ने यहाँ दो अलग जातियाँ बनाई,
एक तबका गरीब तो वही एक अमीर का है |

शायद वो अब किसी पर विश्वास न करे,
कुछ अपने होंगे जिसने उसे धोख़ा दिया है |

वह दिल पत्थर पहले कभी था ही नही,
ज़िंदगी मे ये एक बार नही बार बार टूटा है |

वो इंसान कभी एक दिन मे नही बदला,
उसको बदलने मे वक़्त तो काफी लगता है |

कोई इंसान कभी खुद से नही बदलता,
हर बदलाव का कारण ये जमाना ही रहा है |

यहाँ जब बारी अपनी आती है तो भूल जाते है

हम औरों से इंसानियत की उम्मीद करते है,
यहाँ जब बारी अपनी आती है तो भूल जाते है |

मदद करना चाहते हो फिर करते क्यूँ नही,
उस वक़्त कैसे तेरे हाथ मदद को रुक जाते है |

जब खुद पर बीती तब जुर्म जुर्म लगता है,
जब किसी और पर हो फिर क्यूँ बातें बनाते है |

तुम तो झूठ की ताक़त के आगे झुक गये,
कोई सच के लिए लड़े तो क्यूँ मजाक बनाते है |

आपमें तो शायद इंसानियत बची ही नही,
जिसमें है उनके रास्तों के बीच मे क्यों आते है |

कोई जबाब ना दे तो कमजोर न समझना,
वो अपने बेहतर किरदार की मर्यादा जानते है |

भगवान् तुझे करुणा और दया से बनाया,
क्यूँ काम क्रोध लोभ मोह के पीछे ही भागते है |

कैसा इंसान जो किसी के काम ना आये,
पर यहाँ आप तो मतलब से ही हाथ मिलाते है |

इंसानियत से ही तो इंसान नाम निकला है,
वर्ना जीने के कई तरीके जानवर भी जानते है |

कई बार वक़्त सोचने मे ही गुजर जाता है,
हम तो ज़िंदगीभर अफसोस करते रह जाते है |

हम औरों से इंसानियत की उम्मीद करते है,
यहाँ जब बारी अपनी आती है तो भूल जाते है |

नफरत मे इंसान इंसानियत भी भूल जाता है

ज़िंदगी एक बार मिली है तो प्रेम से जीना,
नफरत मे इंसान इंसानियत भी भूल जाता है |

गुस्से से किसी प्रश्न का हल नही मिलता,
उस वक़्त वो सारी सोच समझ भूल जाता है |

किसी को गलत कहना बेहद आसान है,
उसमे कुछ अच्छाई भी है कैसे भूल जाता है |

केवल खुद के दिल के बारे मे कैसे सोचूँ,
दिल तो उसका भी है जो मुझे बेहद चाहता है |

आखिर मै किसी की बाते कैसे मान लूँ,
गलतफहमी से तो रिश्ता ही खत्म हो जाता है |

नफरत से कभी किसी को कुछ मिला है,
प्रेम ही तुम्हें इंसानियत के काबिल बनाता है |

इस नरम लहजे कुछ गुंजाइश होती है,
वर्ना तेज आवाज मे तो सब खत्म हो जाता है |

ऐसे इंसानों को दुनियाँ ने नकार दिया,
जो पलभर मे अपनी बातों से बदल जाता है |

पैसा ज़रूरी तो है पर वह कीमती नही,
मरने के बाद काम तो वह इंसान ही आता है |

फिर ये नफरत कैसी जाति और धर्म मे,
चाहें जो हो आखिर मे चार कंधो पर जाता है |

ज़िंदगी एक बार मिली है तो प्रेम से जीना,
नफरत मे इंसान इंसानियत भी भूल जाता है |

तो कल हवा बन कही और उड़ जाऊँगा

मेरा क्या है शायद मै आज यहाँ हूँ,
तो कल हवा बन कही और उड़ जाऊँगा |

कभी तो मै दो लाइन न लिख पाऊँ,
यहाँ कभी मै पूरी कविता लिख जाऊँगा |

कभी मौका मिला बादल बनने का,
बिना आवाज किये मै तो बरस जाऊँगा |

सागर की खामोशी कोई ना सुनता,
मै अपनी आवाज को लहरो से बनाऊंगा |

मै जब सपने आसमान के रखता हूँ,
कोशिश की तो एक दिन मै उड़ जाऊंगा |

बेहद मुश्किले आयी पर रुका नही,
पर इस बार इनसे बाहर निकल आऊंगा |

जाने वाले जाये भले बीच रास्ते मे,
मै अपनी आखिरी मंजिल तक जाऊँगा |

हालत चाहें जैसे हो मै ना बदलूंगा,
मै अपना किया हर एक वादा निभाऊँगा |

मै अपनों के लिए हमेशा वैसा ही हूँ,
पर कुछ लोगों के लिए मै बदल जाऊँगा |

मुझे मेरा भगवान् जानता है ना बस,
वो जो रास्ते दिखायेगा मै वहाँ जाऊंगा |

मेरा क्या है शायद मै आज यहाँ हूँ,
तो कल हवा बन कही और उड़ जाऊँगा |

अब मुझे पिछला कुछ भी याद नही

मै चलते हुए इतना आगे निकल गया,
की अब मुझे पिछला कुछ भी याद नही |

समय ने मुझे इतना जिम्मेदार बनाया,
पहले कब मुस्कुराया अब मुझे याद नही |

दुसरों को वक़्त देते रहा पिछले दिनों,
कितना खुद को दे पाया ये भी याद नही |

लोगों की बातें सुन सुन थक गया मै,
मेरा मन जान पाता ऐसा कोई याद नही |

इन ठोकरो से गिरा और संभला भी,
कई बार संभला नही पर अब याद नही |

बेशक कुछ बाजी जीती है यहाँ मैंने,
पर कितनी बार हारा हूँ ये मुझे याद नही |

ज़िंदगी की किताब लिखी है मैंने भी,
पर कितना लिख पाया ये मुझे याद नही |

इस कहानी मे अहम किरदार है मेरा,
कितनों की पसंद बन पाया ये याद नही |

ज़िंदगी मे हर दिन कुछ सीखा है मैंने,
कितना बेहतर बन पाया ये मुझे याद नही |

जब चला था बहुत सपने थे मेरे साथ,
कितने सच हुए कितने बाकी है याद नही |

मै चलते हुए इतना आगे निकल गया,
की अब मुझे पिछला कुछ भी याद नही |

बेशक जमाने से उम्र थोड़ी कम है

बेशक जमाने से उम्र थोड़ी कम है,
पर मुझे उम्र से ज्यादा अनुभव मिला |

यहाँ खिलौनो से खेलने की उम्र मे,
मुझको उनकी कीमतों का पता चला |

जब ख्वाब बुनने की उम्र थी मेरी,
उनके टूटने के सच का भी पता चला |

ख्वाहिशे मारी वक़्त को समझा,
तब इसकी अहमियत का पता चला |

यह मेरे अनुभव एक दिन के नही,
इन्हें जीने मे एक उम्र का वक़्त लगा |

मैंने जो रास्ते चुने वो मुश्किल थे,
जो चुने उससे आसान कुछ ना लगा |

कई बार अपनी कोशिशों मे हारा,
जिनसे मुझे अपनी कमियों पता चला |

मैंने यहाँ रास्ते बदले है तभी मुझे,
इस सही गलत मे फर्क का पता चला |

जब मै दुनियाँ के शोर से निकला,
तभी मुझे मेरी आवाज का पता चला |

खामोशी मेरी कमजोरी है ही नही,
यही से मुझे मेरी ताक़त का पता चला |

बेशक जमाने से उम्र थोड़ी कम है,
पर मुझे उम्र से ज्यादा अनुभव मिला |

पर उन्हें यादों से अलविदा नही कर पायेंगे

लोगों से तो हम अलविदा कह भी देते,
पर उन्हें यादों से अलविदा नही कर पायेंगे |

हम यहाँ नई आदते तो अपना भी लेते,
पर अपनी पुरानी आदते नही भूला पायेंगे |

बेशक मै इस दुनियाँ से जीत भी लेता,
यहाँ हम कभी अपनों से नही जीत पायेंगे |

बातें नही होती क्योंकि वो दूर है हमसे,
पर हमारी बातों मे तो हमेशा नजर आयेंगे |

यहाँ दिल से जुड़े रिश्ते खत्म नही होते,
तेरे हर खास मौके पर वे तुम्हें याद आयेंगे |

जिनके साथ दिन रात गुजारे हो कभी,
कैसे हम हमेशा के लिए उन्हें भूला पायेंगे |

ये खास रिश्ते है कोई कच्चे धागे नही,
तुमने तोड़ा और बस पलभर मे टूट जायेंगे |

अपनी इस जिद मे रिश्ते तुमने तोड़े है,
आखिर बिना तेरे मनाये कैसे मान जायेंगे |

क्या हुआ अगर माफी भी मांगनी पड़े,
शायद कुछ वक़्त यहाँ साथ गुजार पायेंगे |

कोई ज़िंदगी से जाये एक बार रोकना,
तू रोके तो वो भी अलविदा ना कह पायेंगे |

लोगों से तो हम अलविदा कह भी देते,
पर उन्हें यादों से अलविदा नही कर पायेंगे |

यहाँ मै खुद को किसी तरह समझा भी लूँ,

यहाँ मै खुद को किसी तरह समझा भी लूँ,
जमाने को कुछ भी समझाना बड़ा ही मुश्किल है |

यहाँ काम करते हुए यह दिन गुजार भी लूँ,
करवटे बदलकर रातें गुजारना बड़ा ही मुश्किल है |

मै खुद को बदल भी दूँ इस जमाने के लिए,
पर इस जमाने को बदल पाना बड़ा ही मुश्किल है |

किसी के लिए मै अपनी हार मान भी लेता,
पर कभी तो ये जमाना हारे कहना भी मुश्किल है |

यहाँ मै एक बेहतर किरदार बन सकता हूँ,
पर वही किरदार हमेशा निभा पाना ही मुश्किल है |

ये जमाना चाहता है की सोच खूबसूरत हो,
फ़िर भी सही और गलत पहचानने मे मुश्किल है |

यही जमाना चाहता है की सर उठा कर चले,
फिर किसी के आवाज उठाने मे कैसी मुश्किल है |

कहते है की किताबो मे काफी कुछ लिखा है,
वही बातें ज़िंदगी मे दोहराने मे कैसी मुश्किल है |

यहाँ आज मुझे ठोकर लगे तो संभल जाऊँगा,
ये ठोकर जमाने को लगे तो एक बड़ी मुश्किल है |

मैंने फिर भी अपने लिए काफी कुछ सोचा है,
पर जमाने के बारे मे सोच पाना बेहद मुश्किल है |

यहाँ मै खुद को किसी तरह समझा भी लूँ,
जमाने को कुछ भी समझाना बड़ा ही मुश्किल है |

देख अभी सवेरा होने वाला है

भूल जाना जो रात गयी,
देख अभी सवेरा होने वाला है |

तुझे जो डर था अंधेरे का,
देखो सूरज निकलने वाला है |

कलम कागज है तू लिख,
कहानी मे मोड़ आने वाला है |

ठोकर खाकर तू गिर गया,
तू अब और निखरने वाला है |

तू बस कोशिश करते रहना,
ये वक़्त अब बदलने वाला है |

जो सपने देखें करीब है वो,
कुछ हिस्सा सच होने वाला है |

ये खामोशी इतनी है आज,
शायद ये तूफान आने वाला है |

पिछले लोग सब छुट रहे,
कोई तो खास आने वाला है |

रास्ता कुछ बदल रहा है,
शायद नया मोड़ आने वाला है |

अब तू उदासी से निकल,
तेरा ये चेहरा मुस्कुराने वाला है |

भूल जाना जो रात गयी,
देख अभी सवेरा होने वाला है |

जो दुनियाँ मे अपना रास्ता खुद बनाता है

अक्सर भीड़ मे चलकर यहाँ इंसान,
जितनी कोशिश करे भीड़ मे खो जाता है,
इंसान सिर्फ पहचान वही बनाता है,
जो दुनियाँ मे अपना रास्ता खुद बनाता है |

दुनियाँ मे अकेले भी कब तक चलते,
अकेला इंसान कभी तो उलझ ही जाता है,
मै मुसाफिर दोस्ती मुसाफिर से करता,
मेरा यह रास्ता आसानी से गुजर जाता है |

मैंने बचपन मे यहाँ इतने आँसू बहाये,
ये आते भी है तो हर कतरा सूख जाता है,
कुछ ऐसा होता भी है मेरा दिल है ना,
मेरे हर गम मे यूँ ही जार जार हो जाता है |

एक एक तिनका जोड़ के घोंसले बने,
तूफान आते ही वो पलभर मे टूट जाता है,
ऐसे ही मैंने अपने सपने बार बार जोड़े,
खराब वक़्त और सब खराब हो जाता है |

उस आशिक को मोहब्बत न आयी,
जो मोहब्बत ना मिले तो जान दे जाता है,
जो मोहब्बत ना मिली फिर भी जिये,

वो सिर्फ उन यादों मे दीवाना हो जाता है |

तूने सीखने की कोशिश तो की होती,
वक़्त तो हर इंसान को काबिल बनाता है,
यहाँ तुम यूँ ही सवालों मे उलझे रहे,
यहाँ जबाब पहले दिन ही मिल जाता है |

तुम सिर्फ खुद पर विश्वास करते हो,
यहाँ एक बार नियति पर विश्वास करते,
यहाँ कुछ भी तो बेवजह नही होता,
वक़्त तेरे लिए रास्ते यहाँ खुद बनाता है |

एक दिन ये इंतजार भी खत्म होगा,
जो तुने चाहा है वो तुझे मिल जायेगा,
तेरे इंतजार की आखिरी परीक्षा है,
देखना है तू कब तक सब्र रख पाता है |

बेशक तेरी रात आज लम्बी होगी,
ये वक़्त करवटे बदल कर गुजर पायेगा,
मै जैसे ही लिखना शुरू ही किया,
इतनी देर मे सवेरा भी निकल आता है |

यहाँ रास्ते कभी खराब नही होते,
पर ये वक़्त हालात हमे उलझाते रहे है,
बाकी जो इंसान धैर्य से चलते रहे,
वह अपनी मंजिल तक पहुँच जाता है |

अक्सर भीड़ मे चलकर यहाँ इंसान,
जितनी कोशिश करे भीड़ मे खो जाता है,
इंसान सिर्फ पहचान वही बनाता है,
जो दुनियाँ मे अपना रास्ता खुद बनाता है |

मेरा खुद का ठिकाना नही अब तक

मेरा खुद का ठिकाना नही अब तक,
और परवाह मै सारे शहर की करता हूँ|

मै किताबे पढ़ता पर अधूरी छोड़ दी,
मै कुछ कहानियों के अन्त से डरता हूँ|

इज्जत से रहने का हक सभी को है,
मै इज्जत बस इंसानियत की करता हूँ|

मेरे टालने से कुछ भी तो ना टलेगा,
क्यूँ फिर मै कुछ बदलावों से डरता हूँ|

आईने मे कभी अपना चेहरा न पढ़ा,
वैसे मै इस सारे शहर के चेहरे पढ़ता हूँ|

मै इस सारे जमाने की चमक छोड़,
मै यहाँ कद्र सिर्फ सादगी की करता हूँ|

जब कोई शख़्स उदास दिखे मुझे,
आखिर मै क्यूँ ये आँखे नम रखता हूँ|

ये मोहब्बत सिर्फ तकलीफ देती है,
मै ऐसी परिभाषा से सवाल करता हूँ|

अपने लिए तो लड़ा ना आजतक,
जाने क्यूँ सच के लिए लड़ने लगता हूँ|

बेहद साधारण किरदार है ये मेरा,
बातें मै सारी दीवानगी वाली करता हूँ|

मेरा खुद का ठिकाना नही अब तक,
और परवाह मै सारे शहर की करता हूँ|

क्यूँ शब्दों को हवाओं मे नही गुजने देते

क्यूँ शब्दों को हवाओं मे गुजने नही देते,
क्यूँ तुमने इन्हें ऐसे किताबों मे छुपा रखा है |

तेरी आवाज तो यहाँ कितनी प्यारी है,
फिर क्यूँ तुमने इसे होंठो तले दबा रखा है |

मै नही था ऐसा जमाने के जुर्म सहे है,
तब जाकर खुद को मैने ऐसा बना रखा है |

चार दीवारों मे रहना किसे पसंद होगा,
जब खुद को उड़ने के काबिल बना रखा है |

मै चाहकर भी खुद को छुपा नही सका,
मैंने अपना किरदार कुछ ऐसा बना रखा है |

मेरी गलती थी या फिर वक़्त खराब था,
किस्मत ने जैसे मुझे हमेशा ठुकरा रखा है |

लोग बहुत आये पर साथ नही रह सकें,
इन्होंने तो बस मुझे मुसाफिर बना रखा है |

यहाँ दिल के टूटने की भी हद तो होती,
यूँ ही नही खुद को जार जार बना रखा है |

कुछ तो है तभी तो ये ज़िंदगी बाकी है,
उम्मीदों के सहारो ने ही मुझे जिंदा रखा है |

एक दिन मेरे शब्द हर दिल तक पहुँचे,
मैंने अपनी आँखो मे इंतजार सजा रखा है |

क्यूँ शब्दों को हवाओं मे नही गुजने देते,
क्यूँ तुमने इन्हें ऐसे किताबों मे छुपा रखा है |

सोच को तो आजाद रखा जा सकता है

शायद तुमको कोई गुलाम बना भी ले,
सोच को तो आजाद रखा जा सकता है |

तो क्या हुआ तुझे तेरा हक ना मिला,
उसे पाने के लिए लड़ा भी जा सकता है |

जानता हूँ जो तेरा रास्ता है कठिन है,
पर उसे आसान भी किया जा सकता है |

ये वक़्त कभी खुद को नही बदलेगा,
पर खुद को तो बदला जा ही सकता है |

दुनियाँ मे ईमान से जीना मुश्किल है,
ज़रूरत कम हो तो जिया जा सकता है |

खामोश है की अभी ज़रूरत नही है,
जबाब हर बात का दिया जा सकता है |

मैं खामोश रहकर जान पाया कैसे,
आवाज को बुलंद बनाया जा सकता है |

बेशक मेरी ये शुरुआत छोटी होगी,
पर अन्त तो बड़ा बनाया जा सकता है |

प्यार दोनों ओर से हो ज़रूरी नही,
इसे एकतरफा भी किया जा सकता है |

लिखने की वजह कभी खत्म न हो,
दिल करे तब तक लिखा जा सकता है |

शायद तुमको कोई गुलाम बना भी ले,
पर सोच को आजाद रखा जा सकता है |

दुआओं मे क्या रखा है

पढ़ना हो तो कोई चेहरा पढ़ो,
किताबों मे क्या रखा है,
करनी हो तो किसी की मदद करना,
दुआओं मे क्या रखा है |

वादा था पर वो नही आया,
मजबूरी होगी नही आया,
क्या हुआ तू ही मिलने चले जाना,
इंतजार मे क्या रखा है |

ढूँढना हो तो अंधेरो मे ढूँढ,
रोशनी मे सब दिखता है,
तुझे जो करना बस कर गुजरना,
सोचने मे क्या रखा है |

मोहब्बत तू शिद्दत से कर,
इबादत मे क्या रखा है,
बस हदें इसमें दीवानगी वाली हो,
आशिक़ी मे क्या रखा है |

आईना क्या जाने खूबसूरती,
वहाँ सिर्फ चेहरा दिखता है,
फुर्सत मिले पढ़ना मेरी कविताएँ,

आईने मे क्या रखा है |

देखो तो सागर की खामोशी,
गहराई मे क्या रखा है,
देखो तो उठती लहरों को देखना,
किनारों मे क्या रखा है |

साथ है तो दो बातें करते है,
खामोशी मे क्या रखा है,
अगर कोई मनाये तो मान जाना,
नाराजगी मे क्या रखा है |

मिलने को मुलाक़ात करना,
इत्तेफ़ाक़ मे क्या रखा है,
ज़िंदगी जियो तो आज मे जीना,
यादों मे क्या रखा है |

जो करना है करके दिखाना,
इन दावों मे क्या रखा है,
जो सिर्फ एक रात मे उतर गया,
ऐसे नशे मे क्या रखा है |

बातें इनकी कुछ अलग है,
लहजा कुछ और रखा है,
तू इन लोगों के ईशारे समझना,
शब्दों मे क्या रखा है |

माँ वो शब्द जो बच्चा पहली बार बोलता है

उस बच्चे ने उसे रात रातभर जगाया है,
माँ ने हर बार जग उसको बार बार सुलाया है |

माँ जिसने गिनती नही की खिलाने की,
उसने हर बार मुझे भूख से ज्यादा खिलाया है |

वो बच्चा बार बार गिरता ही रहता यहाँ,
उसे माँ ने एक एक कदम चलना सिखाया है |

ये मुश्किलें तेरे करीब आकर गुजर गयी,
माँ की इन दुआओं ने मुझे हर बार बचाया है |

खुद को वो जलाती रही इस भरी धूप मे,
यहाँ आँचल से मेरे लिए एक साया बनाया है |

किसने कहा भगवान् मुरत मे दिखते बस,
मैंने ऐसा भगवान् जब धरती पर ही पाया है |

हमेशा हर ख्वाहिश पूरी करके बच्चे की,
उसने अपनी सारी ख्वाहिशो को भुलाया है |

कद्र करना जो माँ की ममता मिली तुम्हें,
वर्ना तरसते है वो जिन्हें न मिला वो साया है |

ये वो कर्ज है तुम कभी उतार ना पाओगे,
ये उम्र के साथ बस हर दिन बढ़ता जाता है |

उस बच्चे ने उसे रात रातभर जगाया है,
माँ ने हर बार जग कर उसे हर बार सुलाया है |

हवाओं के साथ मै रुख अपना बदल रहा हूँ

हवाओं के साथ मै रुख अपना बदल रहा हूँ,
क्या जो हो रहा सही है जो भी मै समझ रहा हूँ|

मंजिल का पता ना चल पाया मुझे अब तक,
अब इन रास्तो बदलने की कोशिश कर रहा हूँ|

पिछले पन्नों को उलटने से भी क्या फायदा,
मै ये तैयारी और बेहतर लिखने की कर रहा हूँ|

पिछले दिनों काफी चीजें खराब हुई है यहाँ,
बस मै उनके सही होने का इंतजार कर रहा हूँ|

सही वक़्त भी आयेगा चीजें सही भी होंगी,
उस वक़्त के लिए मै खुद को तैयार कर रहा हूँ|

मुझे परवाह नही की कोई क्या समझता है,
मैं खुद को बेहतर बनाने कोशिशे कर रहा हूँ|

अहम का भाव मेरे कभी सर पर न ही चढ़े,
लोगों के लिए खुद को थोड़ा नरम बना रहा हूँ|

मेरे रास्ते अब अपनी मंजिल को तरस रहे,
मै खुद को हर दिन इसी ख्याल मे तड़पा रहा हूँ|

दिल को डर है ये सपना पूरा होगा या नही,
और हर बार की तरह मै उसको समझा रहा हूँ|

अब हर कदम भारी है डर भी लग रहा है,
यहाँ बस बार बार उसका ध्यान भटका रहा हूँ|

हवाओं के साथ मै रुख अपना बदल रहा हूँ,
क्या जो हो रहा सही है जो भी मै समझ रहा हूँ|

मसला ये नही युद्ध मे हार मिली या जीत

मसला ये नही युद्ध मे हार मिली या जीत,
जिंदगियाँ गवाकर यहाँ कौन क्या ही पायेगा |

वो छत एक एक ईट जोड़कर बनाई गयी,
क्या वो इंसान फिर वैसा ही घर बना पायेगा |

बच्चे के सर से बाप का साया चला जाय,
वो अब किसके कंधे पर मेले देखने जायेगा |

जब बचपन मे बचपन छीन जाये तुम्हारा,
वो बचपन भी फिर कहाँ बचपन रह पायेगा |

कैसे यहाँ तुम जीत जश्न मना सकते हो,
वो जश्न बहते हुए आँसूओ को रोक पायेगा |

क्या फर्क है गोली यहाँ चली थी या वहाँ,
ये खून सिर्फ मासूमों का ही बहाया जायेगा |

क्या खबर उस दुल्हन को मेहंदी से पहले,
उस माथे से मांग का सिंदूर ही उड़ जायेगा |

क्या सोचा होगा माँ बाप ने ऐसा भविष्य,
आँखो के सामने जवाँ बेटा कंधे पर आयेगा |

अरमान थे उनके भी कुछ सपने भी होंगे,
नही सोचा हर सपना टूटकर बिखर जायेगा |

युद्ध मे यहाँ हार जीत होती है याद रखना,
ये आँखो मे नमी की वजह ही देकर जायेगा |

मसला ये नही युद्ध मे हार मिली या जीत,
जिंदगियाँ गवाकर यहाँ कौन क्या ही पायेगा |

अकेला आया है तू अकेला तुझको जाना है

अकेला आया है तू अकेले तुझको जाना है,
जिंदगी के रास्तों में तुम्हें तन्हा चलते जाना है |

सालों से जो ख्वाब देखें पलभर मे टूट गये,
हर दिन टूटते ख्वाब है फिर एक नया बनाना है |

तू छोड़ लोगों का साथ ये तो पलभर के है,
ये रास्ते भी तन्हा है तुझे यहाँ तन्हा ही जाना है |

यहाँ दिल तेरा तू इसे बस खुद से ही लगा,
वो कमजोर है तो क्यूँ किसी और से लगाता है |

कोई नही है पर भगवान् तो तेरे साथ होगा,
फिर क्यूँ किसी और के सामने सर झुकाता है |

तू है काबिल इतना की दुनियाँ जीत लेगा,
अभी बस एक हार है क्यूँ तू इससे घबराता है |

सपना तूने देखा है पूरा भी तुझे करना होगा,
क्यूँ किसी को इसमें शामिल करना चाहता है |

हाँ तुझको ठोकर लगेगी तू गिर भी जायेगा,
जो कोई गिरता है तो संभलना भी आ जाता है |

लोगों की परवाह छोड़ तू अपने बारे सोच,
जाने दो लोगों को उनका काम ही कहने का है |

शायद तेरी मंजिल तेरे इंतजार मे खड़ी है,
तू चलते रहना बस तुझे कब किसी ने रोका है |

अकेला आया है तू अकेले तुझको जाना है,
जिंदगी के रास्तों में तुम्हें तन्हा चलते जाना है |

जो जैसी सोच रखे उसे वैसा ही अच्छा लगता है

इस नई दुनियाँ को दस्तूर नया ये जचता है,
जो जैसी सोच रखे उसे वैसा ही अच्छा लगता है |

नीम की जुबाँ मिठास का स्वाद क्या जाने,
जो जुबाँ कड़वी है उसे कड़वा ही अच्छा लगता है |

अहम का भाव लिए प्रेम को क्या जानोगे,
जब मे दिल नफरत हो हर इंसान गलत लगता है |

बेहतर पाने की खोज मे बेहतर खो दिया,
जो बेहतर नही अब तुम्हें वो भी बेहतर लगता है |

एक ख्वाहिश पाने को कई ख्वाहिशे मारी,
कैसे तुमको जीने का ये तरीका अच्छा लगता है |

फटे पुराने मैले कपड़ो मे जो गरीब दिखता,
नये लिबाज की चमक मे वो भी अमीर लगता है |

खामोश रहने से वो शख़्स सीधा नही होता,
जब बोलता है वही सबसे समझदार भी लगता है |

सर झुका कर चलने की तहजीब भूल गये,
उन्हें अब हर जगह सर उठाना अच्छा लगता है |

इंसान से ज्यादा कीमत पैसों की बढ़ रही,
रिश्तें निभाने के लिए भी अब तो दाम लगता है |

शायद इस कविता मे कुछ कमियाँ रही हो,
पर मैंने भी वही लिखा जो मुझे बेहतर लगता है |

इस नई दुनियाँ को दस्तूर नया ये जचता है,
जो जैसी सोच रखे उसे वैसा ही अच्छा लगता है |

बाकी इंसान तो मै भी मस्त मलंग सा हूँ

जिम्मेदारियों ने समझदार बना दिया है,
बाकी इंसान तो मै भी मस्त मलंग सा हूँ|

लगता तो हूँ पर इतना भी गंभीर नही,
खाली वक़्त शरारते यहाँ मै भी करता हूँ|

कौन कहता की मुझे जीना नही आता,
मै बचकानी हरकते आज भी करता हूँ|

कभी पूछना मेरे बारे मे दोस्तों से भी,
वे बतायेंगे की मै कितनी बातें करता हूँ|

आपने हमे सिर्फ काम करते देखा है,
फ़ुर्सत मिले तो मै मजाक भी करता हूँ|

मुझे समझने मे थोड़ा वक़्त लगे तुम्हें,
जो मुझे समझे है उन्हें बेहतर लगता हूँ|

समय लगा है ऐसा किरदार बनने मे,
मै इसे और भी बेहतर बनाने मे लगा हूँ|

उदासी और गम सबके पास होते है,
मै मुस्कान बनने की कोशिश मे लगा हूँ|

ज्यादा लम्बा सफर सही नही लगता,
मै तो मजा छोटे छोटे सफर का लेता हूँ|

आदते छुड़ाना बेहद मुश्किल होता है,
फिर भी मै ये आदते बिगाड़ने मे लगा हूँ|

जिम्मेदारियों ने समझदार बना दिया है,
बाकी इंसान तो मै भी मस्त मलंग सा हूँ|

यहाँ कभी बारिशें बेमौसम नही होती

यहाँ कभी बारिशें बेमौसम नही होती,
इसके पीछे भी कई खूबसूरत वजह होती है |

इस मिट्टी से खुशबू तभी आती है यहाँ,
जब ये वजह दो दिलों के मिलन की होती है |

पत्तो पर गिरती हर बूंद की वो आवाज,
लग रहा है जैसे वो आपस मे बातें कर रहे है |

किसी का ये चेहरा बारिश से खिला है,
तो किसी की आँखे यहाँ पर सच मे भीगी है |

वो नक़ाब भी उतर गया इस बारिश मे,
इस बारिश मे कुछ चेहरे साफ भी हो रहे है |

वो हवाएं भी जोर जोर से कह रही यहाँ,
किसी के इंतजार की घड़ियाँ खत्म हो रही है |

मोर बारिश मे खुशी से झूम रहा आज,
जैसे उसकी सालों पुरानी दुआ कुबूल हुई है |

यहाँ पेड़ भी आज बारिश मे ऐसे भीगें,
जैसे किसी के तो स्वागत तैयारी चल रही है |

बादल भी गड़गड़ाहट यहाँ ऐसे कर रहे,
जैसे ढोल ताशों की ये बारात निकल रही है |

बच्चों ने नाव बनाई दूर तक निकल गई,
ऐसे देख रहे है जैसे कोई दुल्हन विदा हो रही है |

यहाँ कभी बारिशें बेमौसम नही होती,
इसके पीछे भी कई खूबसूरत वजह होती है |

रुका तो जाना मै बहुत आगे निकल आया हूँ

चलते चलते वक़्त का अंदाज़ा ना लगा,
रुका तो जाना मै बहुत आगे निकल आया हूँ|

मै रास्तो पर काफी कुछ छोड़ आया था,
काफी कुछ ऐसा है जो साथ लेकर आया हूँ|

इस जमाने से लड़ने की ताक़त नही थी,
मै इस दौरान काफी कुछ सीखकर आया हूँ|

मै कब से यहाँ अंधेरों मे भटक रहा था,
मै यहाँ फिर रोशनी के मायने लेकर आया हूँ|

मेरे सपने जो कभी टूटकर बिखर गये,
मै यहाँ तक उन टुकड़ो पर चलकर आया हूँ|

बिना किसी वादे के मै कब तक ठहरता,
इंतजार की बातें मै बहुत पीछे छोड़ आया हूँ|

दुनियाँ की बातें मुझे समझ नही आती,
मै यहाँ ये रास्ते खुद तय करते हुए आया हूँ|

कितनी बार गिरा बार बार संभला यहाँ,
मै रास्तों की हर एक ठोकर खाकर आया हूँ|

यहाँ कई हालातो का सामना किया था,
तभी तो आज खुद को बेहतर बना पाया हूँ|

किसी को गम की एक वजह न दे पाऊँ,
तभी यहाँ मुस्कुराहट की वजह बन पाया हूँ|

चलते चलते वक़्त का अंदाज़ा ना लगा,
रुका तो जाना मै बहुत आगे निकल आया हूँ|

सफर में मजा आज है

छोड़ो कल की परवाह,
क्या कल की फिक्र कीजिये,
सफर मे मजा आज है,
तो इसे आज ही मे लीजिये |

यह दिन भी गुजर गया,
खुद को एक मौका दीजिये,
काफी वक़्त गुजर गया,
आज तो कुछ बात कीजिये |

रोज काम करते करते,
ये वक़्त ऐसे गुजर जाता है,
कुछ वक़्त निकाल कर,
दोस्तो से भी मिला कीजिये |

ज्यादा अच्छा होने से,
दुनियाँ फायदा ही उठाती है,
लोगों के लिए खुद को,
थोड़ा खुदगर्ज बना लीजिये |

अगर कुछ खो गया है,
यहाँ ज्यादा गम क्यों करना,
जो मिला है अब तक,

बस मजा उसी का लीजिये |

कुछ उलझे सवालों मे,
यहाँ वक़्त क्यूँ बर्बाद करना,
जबाब तो मिल जायेगा,
पहले सीखना शुरू कीजिये |

मै सर झुका चलता हूँ,
ताकि ये जमीन दिखती रहे,
बाकी काबिल इतना हूँ,
की आसमाँ मे उड़ा लीजिये |

शाँत रहने मे बुराई नही,
ये तेरी ताक़त बन सकती है,
तू बोले लोग सुनते रहे,
आवाज बुलंद बना लीजिये |

पूरी कोशिश करके भी,
हमेशा अधूरा छुट ही जाता है,
थोड़ा कदमो को थामिये,
बस एक गहरी साँस लीजिये |

जमाने की इस चमक मे,
क्यूँ यहाँ खुद को जलाता है,
छोड़ो भी इस जमाने को,
मजा तुम सादगी का लीजिये |

दिल से दिल लगाकर,
यहाँ ये हर बार टूट जाता है,
छोड़ो अब इंसानो को,
मोहब्बत बहारों से कीजिये |

उदासी के बहाने रहते है,
पर किसी को यह पसंद नही,
जब तक ज़िंदगी है बाकी,
मजा मुस्कुराहट का लीजिये |

छोड़ो कल की परवाह,
क्या कल की फिक्र कीजिये,
सफर मे मजा आज है,
तो इसे आज ही मे लीजिये |

जब हम इंसान सिर्फ खिलौने है

जब हम इंसान सिर्फ खिलौने है,
फिर जीने के लिए इतने सवाल क्यूँ।

जब ये खिलौने सिर्फ मिट्टी के है,
तो फिर दिलों मे जज्बात बनाये क्यूँ।

जब हमे यहाँ बिछड़ जाना ही था,
किस्मत ने हमे यहाँ मिलाया ही क्यूँ।

.

जब दिल का टूटना ही नियति है,
तो खुदा ने यहाँ दिल बनाया ही क्यूँ।

जो रास्ते मंजिल तक नही जाते,
फिर यहाँ ऐसे रास्ते बनाये ही क्यूँ।

जब मेरे सपने सच नही होने थे,
तो फिर मुझे ऐसे सपने दिखाये क्यूँ।

जब चीजों को मिलना नही था,
आखिर इतना इंतजार कराया क्यूँ।

यहाँ अच्छे लोग धोख़ा खाते है,
फिर मुझे इतना अच्छा बनाया क्यूँ।

जब वो किस्मत मे था ही नही,
ऐसे शख़्स से दिल लगाया ही क्यूँ |

जो आदते छोड़ना मुश्किल हो,
ऐसी आदतें आप अपनाये ही क्यूँ |

जब हम इंसान सिर्फ खिलौने है,
तो जीने के लिए इतने सवाल क्यूँ |

पहले खुद को बेहतर बनाना पड़ता है

मुझे कुछ बेहतर लिखने के लिए,
पहले खुद को बेहतर बनाना पड़ता है |

जो चाँद की खूबसूरती लिखता मै,
तो पहले उन रातों मे जागना पड़ता है |

मै ये हालात को तब लिख पाया,
जब उनके बीच वक़्त गुजारा होता है |

कुछ भी पाना हमेशा मुश्किल है,
सही वक़्त का इंतजार करना पड़ता है |

दिल के जज्बात लिखने के लिए,
एक बार तो दिल लगाना ही पड़ता है |

एक पौधा तो छाँव नही दे पायेगा,
पहले उसे खुद को पेड़ बनाना पड़ता है |

सर उठाकर तो आसमां दिखता है,
जमीं देखने को सर झुकाना पड़ता है |

तेरा बनाये रास्ते थोड़े मुश्किल है,
कई बार दुनियाँ से लड़ जाना पड़ता है |

सख्त स्वभाव से लोग दूर रहते है,
स्वभाव को सरल भी बनाना पड़ता है |

लोगो को मेरी उदासी नही चाहिए,
कई बार मुझे झूठा मुस्कुराना पड़ता है |

मुझे कुछ बेहतर लिखने के लिए,
पहले खुद को बेहतर बनाना पड़ता है |

हर रोज मेरे दिल मे एक ख्याल आता है

हर रोज मेरे दिल मे एक ख्याल आता है,
और मै बस वही से लिखना शुरू कर देता हूँ|

खुदा मेरे लिए रास्ते यहाँ खुद बनाता है,
मै भी उसी रास्तो पर चलना शुरू कर देता हूँ|

सपने सच होंगे या नही मै नही जानता,
उन्हे पूरी करने की कोशिशें शुरू कर देता हूँ|

यहाँ किताबे मेरी सबसे अच्छी दोस्त है,
मौका मिलते ही उन्हें पढ़ना शुरू कर देता हूँ|

दुनियाँ की भीड़ मे जब खो जाता हूँ मै,
मै तो खुद को तलाश करना शुरू कर देता हूँ|

जब कुछ चीजे मुझे समझ नही आती,
बस उन्हें बार बार दोहोराना शुरू कर देता हूँ|

एक दिन मे कोई बेहतर नही होता यहाँ,
इसलिए मै हर दिन सीखना शुरू कर देता हूँ|

जब भी जमाना मुझे यहाँ सर चढ़ाता है,
मै तो इस जमीन को देखना शुरू कर देता हूँ|

बेशक जमाने से मेरे तजुर्बे थोड़े कम है,
जितना सीखे उतना लिखना शुरु कर देता हूँ|

मेरी ज़िंदगी मे चुनौतियाँ बहुत आयेगी,
मै पहले से अपनी तैयारियाँ शुरू कर देता हूँ|

हर रोज मेरे दिल मे एक ख्याल आता है,
और मै बस वही से लिखना शुरू कर देता हूँ|

किताबों तले वो नाजुक कंधा झुका जा रहा है

किताबों तले वो नाजुक कंधा झुका जा रहा है,
आज हर बच्चे से उसका बचपन छीना जा रहा है |

दादा दादी की कहानी अब नही मिलती कही,
संस्कार जैसे शब्दों का अर्थ खत्म होता जा रहा है |

बड़े लोगों की लड़ाई मे बच्चे दूर हो गये यहाँ,
यहाँ तो बच्चों को बच्चो से ही दूर किया जा रहा है |

पेड़ भी काटे उन्होंने और फिर जंगल काटे है,
अब मंदिर बनाकर खेल का मैदान छीना जा रहा है |

जीवन की व्यस्तता मे माँ बाप भी दूर हो गये,
यहाँ व्यवहार सामाजिक ज्ञान भी छीना जा रहा है |

सपने तो उन्हे यहाँ बड़े बड़े दिखाये जा रहे है,
पर उसकी हकीकत से उनको दूर रखा जा रहा है |

माँ बाप की ख्वाहिशें पूरी करने मे वो बच्चा,
अपनी ज़िंदगी की हकीकत को भूलता जा रहा है |

वो घर नही है अब वो महल बन गये है यहाँ,
अब पंछी यहाँ चार दीवारों मे कैद होता जा रहा है |

वह जला नही धूप मे यहाँ चला नही धूप मे,
दुनियाँ के हर रास्ते मे वह जल्दी थकता जा रहा है |

अपनी सहूलियत के लिए वो कैद कर दिया,
शायद अब वो बच्चा भी कमजोर होता जा रहा है |

किताबों तले वो नाजुक कंधा झुका जा रहा है,
आज हर बच्चे से उसका बचपन छीना जा रहा है |

मै बात कुछ अपनी तो कुछ इस दुनियाँ की करता हूँ

मै बात कुछ अपनी तो कुछ इस दुनियाँ की करता हूँ,
कुछ शब्दों से बेहतर शब्द बनाने की कोशिश कर रहा हूँ|

शायद मेरी उम्र और मेरे अनुभव भी अभी कम होंगे,
जितने मिले है उन्हें बेहतर लिखने की कोशिश कर रहा हूँ|

उसे समझना और समझाना थोड़ा सा मुश्किल होगा,
शायद मै पहले खुद को समझने की कोशिश कर रहा हूँ|

ये सच है यहाँ कोई भी चीज आसानी से नही मिलती,
इसलिए बस सही वक़्त के आने का इंतजार कर रहा हूँ|

हर ज़िंदगी की यहाँ प्रेम की अपनी अलग कहानी है,
मै बस उनके कुछ किस्से लिखने की कोशिश कर रहा हूँ|

ज़िंदगी निकलती जा रही फिर भी जीना नही आया,
बस कुछ जीने के तरीके खोजने की कोशिश कर रहा हूँ|

सपना तो देख लिया मैंने पर वो यहाँ सच कैसे होगा,
मै उस सपने को सच करने का यहाँ रास्ता खोज रहा हूँ|

वक़्त कम मिलता है मुझे की कुछ नया कर पाता मै,
खाली वक़्त ज़िंदगी को लिखने की कोशिश कर रहा हूँ|

ज्यादा शब्द से किसी का यहाँ दिल भी टूट सकता है,
मै कम शब्दों मे कुछ बेहतर बोलने के तरीके सीख रहा हूँ |

जब जब बेहतर शब्द मिलेंगे मै यहाँ लिखता रहूँगा,
मै शब्दों से दिलों मे उतरने के कुछ हुनर भी सीख रहा है |

मै बात कुछ अपनी तो कुछ इस दुनियाँ की करता हूँ,
मै कुछ शब्दों से बेहतर शब्द बनाने की कोशिश करता हूँ |

बस सही वक़्त का थोड़ा इंतजार करना होगा

रास्ते बदल भी जाए पर मंजिल तो मिलेगी,
बस सही वक़्त का थोड़ा इंतजार करना होगा |

बेशक अभी मै गमो साये मे अभी घिरा हूँ,
वक़्त आने पर मुस्कुराने का मौका भी मिलेगा |

जितना जीता है काफी होगा तुम्हारे लिए,
वर्ना यहाँ हार का सिलसिला तो चलता रहेगा |

तेरी नाकामियां ही यहाँ तुझे सिखाती है,
जीतने के लिए तुझे थोड़ा इंतजार करना होगा |

यहाँ ये इज्जत सिर्फ बातों से नही बढ़ती,
तेरा व्यक्तित्व इस जमाने मे तेरी पहचान होगा |

टुकड़ों मे बिखरे पत्थर तेरे किस काम के,
उनको मिलाकर पहले एक चट्टान बनना होगा |

मै जानता हूँ यहाँ मेरा ख्वाब बेहद बड़ा है,
सफर लम्बा है सच करने को चलना तो होगा |

शायद अभी कुछ लोगों की पसंद नही हूँ,
थोड़ी कमी है शायद और बेहतर बनना होगा |

मेरे शब्द बेहतर है पर किसी को खराब है,
शायद कहने से पहले थोड़ा और सोचना होगा |

हम यहाँ सिर्फ अपनी कोशिशें करते रहे,
चीजें बेहतर तभी होगी जब वक़्त सही होगा |

रास्ते बदल भी जाए पर मंजिल तो मिलेगी,
बस सही वक़्त का थोड़ा इंतजार करना होगा |

पर कुछ फैसले ले पाता वो हक ना मिले

मुझे जिम्मेदारीयाँ तो बहुत मिली,
पर कुछ फैसले ले पाता वो हक ना मिले |

हम ज़िंदगी अपने तरीके से जीते,
ऐसे मुझे अब तक कभी हालात ना मिले |

सपने मेरे भी है कोई कद्र तो करे,
मुझे कोई समझे मुझे ऐसे शख़्स न मिले |

मेरे मन की गहराई को देख पाते,
लोग किनारे पर रहे वो दरिया मे ना उतरे |

लोगों ने सागर की तबाही देखी है,
पर गहराई मे छुपे दर्द किसी को ना दिखे |

लड़ा तो मै भी था यहाँ दुनियाँ से,
बुरा लगता है जब थोड़ा श्रेय भी ना मिले |

कोशिशें तो यहाँ हम सबने की थी,
फिर जीत सिर्फ किसी एक को क्यूँ मिले |

कब तक मै अंदर बातें दबा पाता,
डर है कभी मुझे अब सब उड़ेलना न पड़े |

बातें करने से हल निकल आता है,
क्या फायदा जब समझने वाला ना मिले |

जो किस्मत मे होगा मुझे मिलेगा,
पर जो मेरा हक है वह मुझे क्यूँ ना मिले |

मुझे यहाँ जिम्मेदारीयाँ तो कई मिली,
पर कुछ फैसले ले पाता वो हक ना मिले |

पर जिम्मेदारी हमेशा बड़ी ही मिली है

मै अपने घर का सबसे छोटा हूँ,
पर जिम्मेदारी हमेशा बड़ी ही मिली है |

पर प्यार भी मुझे ज्यादा मिला,
मुझे इस बात की तसल्ली भी रही है |

कई दफा ये नुकसान भी रहा,
क्योंकि कुछ चीजें मुझे कम मिली है |

अफसोस नही इन बातों का,
जितना मिला मेरे लिए काफी रही है |

ख्वाहिशे तो मेरी भी थी यहाँ,
जिम्मेदारी मे ये भी अधूरी ही रही है |

ज़िंदगी मे इतना कुछ सहा है,
मेरी सहने की सीमा कम ही बची है |

बेशक सरल स्वभाव रहा मेरा,
बातें तो बातें है ये दिल पर चुभती है |

मै जब से चला ठहरा ही नही,
रास्ते ही नही मंजिल भी बदल रही है |

कितना बेहतर हूँ नही जानता,
पर कोशिशें बेहतर बनने की रही है |

पता नही मेरी ज़िंदगी कैसी है,
पर जितनी मिली बेहतर ही मिली है |

मै अपने घर का सबसे छोटा हूँ,
पर जिम्मेदारी हमेशा बड़ी ही मिली है |

जिन्दा रहने तक जिन्दा दिखना भी ज़रूरी है

बेजुबाँ मुरत किसी काम की नहीं होती,
जिन्दा रहने तक जिन्दा दिखना भी ज़रूरी है |

ख़ामोशी की कुछ सीमाये तय हो यहाँ,
क्योंकि समय आने पर बोलना भी ज़रूरी है |

आखिर कब तक यहाँ अंधेरों मे रहोगे,
अब दिखने के लिए रोशनी मे आना ज़रूरी है |

वो मोहब्बत भी क्या जो लवो तक रहे,
प्यार का ये नूर चेहरे पर दिखना भी ज़रूरी है |

बिना दिल बात कहे वो प्यार अधूरा है,
दिलो के एक होने के लिए इजहार ज़रूरी है |

सपने सच करने की भी बड़ी कीमत है,
इन्हें सच करने को कोशिशें करना ज़रूरी है |

यहाँ एक जीत हमे कुछ नही सिखाती,
कुछ सीखने को एक बार हारना भी ज़रूरी है |

बाहर से अच्छा दिखना काफी नही है,
व्यवहार मे सादगी का झलकना भी ज़रूरी है |

एक वजह से ज़िंदगी खत्म नही होती,
जिंदा है तब तक वो वजह तलाशना ज़रूरी है |

ये ज़िंदगी गुमनामी मे जीने को नही है,
लोगों की जुबान पर तेरा नाम होना ज़रूरी है |

बेज़ुबाँ मुरत किसी काम की नहीं होती,
जिन्दा रहने तक जिन्दा दिखना भी ज़रूरी है |

उसका कितने प्रतिशत सच कर पाऊँगा मै

पता नही ज़िंदगी मे जितना सोचा है,
उसका कितने प्रतिशत सच कर पाऊँगा मै |

ख्वाहिश मैंने यहाँ चाँद बनने की थी,
या तो सितारा बन टूट कर गिर जाऊँगा मै |

मेरा इंतजार हमेशा यहाँ लंबा रहा है,
क्या हर बार इतना इंतजार कर पाऊँगा मै |

मै हमेशा से सरल और खामोश रहा,
पर दुनियाँ मे कब तक ऐसा रह पाऊँगा मै |

कोशिश है हर दिन बेहतर बनने की,
पर सब के लिए कैसे बेहतर बन पाऊँगा मै |

मै हमेशा एक जैसा नही रह सकता,
सच को कैसे झूठला दूँ हाँ बदल जाऊँगा मै |

नहीं जानता क्या कुछ किया है मैंने,
की किसी लिए बेहतर यादें बन पाऊंगा मै |

मै ज़िंदगी मे खों तो बहुत कुछ चुका,
पर नही पता कितना हासिल कर पाऊँगा मै |

सपने तो मैंने यहाँ इतने बड़े देख लिए,
पर नही जानता एक भी सच कर पाऊँगा मै |

मेरे रास्तो मे इतनी मुश्किले होती है,
लड़ पाऊँगा या टूट कर बिखर जाऊँगा मै |

पता नही ज़िंदगी मे जितना सोचा है,
उसका कितने प्रतिशत सच कर पाऊँगा मै |

क्या करूँ मुझे इंसानी बोली नही आती

क्या करूँ मुझे इंसानी बोली नही आती,
वर्ना पूछता की असल मे यहाँ जानवर कौन है |

ये पेड़ और जंगल सब कुछ तुमने काटे,
तो फिर बताओ असल मे यहाँ हैवान कौन है |

मुझे दाना पानी नही अपना घर चाहिए,
इसे बर्बाद करने का हक देने वाला वो कौन है |

इन नदी और झीलों ने क्या बिगाड़ा था,
इनके रास्तो को भी रोकने वाला यहाँ कौन है |

हवा भी स्वच्छ ना मिलती अब कही भी,
यहाँ इन कीमती साँसों से खेलने वाला कौन है |

एक इंसान दूसरे इंसान को मार देता है,
इंसानियत की हत्त्या कर देने वाला वो कौन है |

वह यहाँ धर्म की बातें तो बड़ी करते है,
पर हमारी देह का व्यापार करने वाला कौन है |

अपनी सुरक्षा को इन्होंने सीमाये बनाई,
हमारी सीमाओं को सुरक्षा देने वाला कौन है |

हम तो मजबूर बेजुबाँ और असहाय है,
आखिर हमारी आवाजें सुनने वाला कौन है |

हम शिकार करे तो भी हम जानवर है,
यही इंसान भी करे तो फिर यहाँ इंसान कौन है |

क्या करूँ मुझे इंसानी बोली नही आती,
वर्ना पूछता की असल मे यहाँ जानवर कौन है |

तो जबाब भी हमे ही तलाशने होंगे

जब ज़िंदगी मे सवाल हमारे है,
तो जबाब भी हमे ही तलाशने होंगे |

अपने सपने सच करने के लिए,
ये कदम भी हम ही को उठाने होंगे |

जो भी फैलसे हमसे गलत हुए,
वो फैलसे हम ही को सुधारने होंगे |

जब कोई वादा मैंने ही किया है,
पूरा होने तक मुझे ही निभाने होंगे |

तुम क्यूँ उम्मीदों के भरोसे बैठे,
चलने को कदम तो तुम्हारे ही होंगे |

रिश्तों की डोर बेहद नाज़ुक है,
इसे निभाने को सर भी झुकाने होंगे |

बातें सिर्फ नजरों से नही होती,
इजहार ए लफ्ज जुबाँ पर लाने होंगे |

हमेशा लोग गलत है सही नही,
हमारे ये दायित्व हमे ही निभाने होंगे |

ज़िंदगी थोड़ी उलझी पहेली है,
सुलझाने मे सारे प्रयास लगाने होंगे |

मेरी कविताएँ चाहें जो भी पढ़े,
पर ये शब्द तो हमेशा हमारे ही होंगे |

जब ज़िंदगी मे सवाल हमारे है,
तो जबाब भी हमे ही तलाशने होंगे |

जो समंदर को सीमाओं मे बांधना चाहते हैं

दुनियाँ मे नाकाबिल लगते है वो लोग,
जो समंदर को सीमाओं मे बांधना चाहते है |

अक्सर यहाँ रहते वो लोग पिंजरे मे है,
बातें वो खुले आसमान की करना चाहते है |

खुद का तो रास्ता बना ना कभी उनसे,
दूसरों के रास्ते की अड़चन बनना चाहते है |

वो दुनियाँ की झूठी दौलत शोहरत से,
असल मे सच की आवाज दबाना चाहते है |

वो अहंकार मे खुद को बड़ा बनाकर,
वो बाकी दुनियाँ को छोटा बनाना चाहते है |

ये वो है जिन्हें आसानी से सब मिला,
काबिल जैसे शब्दों का अर्थ कहाँ जानते है |

ये वो मेंडक है जो सिर्फ कुए मे रहे है,
की दरिया कैसा होता है वो कहाँ जानते है |

इन लोगों ने सिर्फ शोर को ही सुना है,
खामोशी की आवाज वो कहाँ पहचानते है |

ये लोग जहाँ रहे है हमेशा वही रहेंगे,
वो कहाँ इस मंजिल के अहमियत जानते है |

अक्सर मै हैरान रह जाता हूँ ये सोच,
आखिर लोग साबित क्या करना चाहते है |

दुनियाँ मे नाकाबिल लगते है वो लोग,
जो समंदर को सीमाओं मे बांधना चाहते है |

कौन होगा जो मुझे मेरी ज़िंदगी से मिला पायेगा

कौन है मेरा ज़िंदगी ए हमसफर,
कौन होगा जो मुझे मेरी ज़िंदगी से मिला पायेगा |

मै एक भटका हुआ मुसाफिर हूँ,
कौन होगा जो मेरी मंजिलों को दिशाएं दे पायेगा |

मै सागर लहरों मे उलझा हुआ,
कौन होगा जो यहाँ मुझे भँवर से निकाल पायेगा |

मै अकेलेपन के बोझ से दबा हूँ,
कौन होगा वो जो मेरा साथ दूर तक निभा पायेगा |

कितने दिन मेरी बातें खुद सुनूँ,
कौन होगा जो सारी बातें दीवानगी से सुन पायेगा |

कब तक यहाँ खुद को संभालूँ,
कौन होगा जो मुझको इन ठोकरो से बचा पायेगा |

वो दिल मे आये पर ठहरे नही,
कौन होगा जो इस दिल मे अपना घर ढूँढ पायेगा |

मेरे कुछ भी करने की वजह है,
आखिर कोई भी यहाँ बेवजह कैसे लिख पायेगा |

मेरी आदत है लोगों को सुनना,
कौन होगा जो मेरी इस खामोशी को सुन पायेगा |

मै वैसा नही जैसा तुमने देखा है,
जो मुझे जितना जानेगा उससे बेहतर ही पायेगा |

कौन है मेरा ज़िंदगी ए हमसफर,
कौन होगा जो मुझे मेरी ज़िंदगी से मिला पायेगा |

मुझे तो हमेशा से किनारा ही अच्छा लगता है

वो बहती नदी बेहद खूबसूरत लगती है,
मुझे तो हमेशा से किनारा ही अच्छा लगता है |

जल का प्रवाह जिसे छूकर गुजर गया,
वह फिर से उसके आने का इंतजार करता है |

वह किनारा प्रेम की एक परिभाषा रहा,
वह हर बार अपना अंश प्रवाह मे छोड़ देता है |

यहाँ ये परिस्थितियाँ जितनी विपरीत हो,
वह हमेशा से ही शांत था और शांत ही रहा है |

किनारे ने हर बार अस्तित्व मिटते देखा,
पर बिना हारे वह नये जीवन को तैयार रहा है |

जब कोई मुसाफिर थक कर बैठा यहाँ,
ये अपनी ठंडी मिट्टी से उसे सुकून देता रहा है |

मैंने खामोशी मे उसकी आवाज सुनी है,
जब वह अपनी और नदी की दास्ताँ कहता है |

खामोशी की वजह भी तो वो जुदाई थी,
कैसा लगता है जब कोई बार बार बिछड़ता है |

सालों लगे है इसे खुद को ऐसा बनाने मे,
वर्ना कोई भी दुनियाँ मे इतना शांत नही रहा है |

हाँ मैं भी नदी मे यूँ तो कई दफा उतरा,
पर सुकून तो मुझको किनारो पर ही मिलता है |

वो बहती नदी बेहद खूबसूरत लगती है,
मुझे तो हमेशा से किनारा ही अच्छा लगता है |

और ख्वाहिश चाँद की करता हूँ

मै टूटे सितारे जैसा एक बंदा,
और ख्वाहिश चाँद की करता हूँ|

मुझसे मेरे लफ्ज नही संभले,
पर बातें निभाने वाली करता हूँ|

यहाँ मंजिल से ज्यादा बातें,
मै यहाँ बातें सफर की करता हूँ|

मुझे तो मुस्कुराहट पसंद है,
फिर भी क्यों मै उदास रहता हूँ|

तुम कही दूर बैठी हो मुझसे,
मै तो तेरे आस पास ही रहता हूँ|

प्यासी उस जमीन की तरह,
मै बारिश का इंतजार करता हूँ|

मेरे लफ्ज कम भी हो कभी,
मै तो लिखने कोशिश करता हूँ|

खुद को दुनियाँ मे खो दिया,
मै फ़िर पाने की कोशिश करता हूँ|

मैंने हर रोज डर को हराया,
फिर क्यूँ अपने डर से डरता हूँ|

खुद को पिंजरों में कैद रख,
चाहत मै आसमाँ की रखता हूँ|

मै टूटे सितारे जैसा एक बंदा,
और ख्वाहिश चाँद की करता हूँ|

मै सच मे गलत हूँ या किसी का ख्याल गंदा है

मै सच मे गलत हूँ या किसी का ख्याल गंदा है,
आखिर कैसे कोई मुझसे भी नाराज रह सकता है |

मुझे तो हर चेहरे पर मुस्कान अच्छी लगती है,
क्या ऐसा शख़्स सच मे किसी को रुला सकता है |

औरों की कामयाबी मे भी झलक अपनी देखी,
क्या ऐसा इंसान किसी का भी बूरा चाह सकता है |

मेरी कोशिश है हमारे लोग सही रास्ते पर चले,
वो कैसे किसी को गलत राह पर जाने दे सकता है |

मैंने तो हमेशा से ही अपना स्वभाव सरल रखा,
कैसे वो इंसान किसी से छल कपट कर सकता है |

किसी अपने के आसूँ मुझे हमेशा ही दर्द देते है,
वह कैसे मासूम से चेहरे को मायूस कर सकता है |

वो जो खुद के अलावा सबकी परवाह करता है,
आखिर कैसे किसी के लिए बेपरवाह हो सकता है |

ये गलतियाँ तो सब करते उससे भी होती होगी,
अच्छाईयों को कोई कैसे नजरंदाज कर सकता है |

ऐसे लोग यहाँ हर किसी को समझ नही आते,
उन्हे किताबों की तरह पहले थोड़ा पढ़ना पड़ता है |

बिना जाने किसी के बारे राय बनाना गलत है,
जो आपने सोचा वो उससे बेहतर भी हो सकता है |

मै सच मे गलत हूँ या किसी का ख्याल गंदा है,
आखिर कैसे कोई मुझसे भी नाराज रह सकता है |

इस बार मैं खोया तो खुद को ढूंढ नही पाऊँगा

बड़ी मुश्किलो से फिर खुद को तलाशा है,
इस बार मैं खोया तो खुद को ढूंढ नही पाऊँगा |

इस बार बिखरा तो संभाल लिया खुद को,
पर अब मै बिखरा तो खुद समेट नही पाऊँगा |

बार बार हारने की भी एक हद तो होती है,
अब मै हारा तो शायद फिर जीत नही पाऊँगा |

मै विपरीत चीजों को अंदेखा कर दूँ यहाँ,
पर हर बार उन्हे कैसे नजरंदाज कर पाऊँगा |

कोशिश तो की मैंने काफी कुछ भुला दूं,
कुछ बाकी रहेगा जिसे मै नही भूला पाऊँगा |

ऐसा कोई नही मिलता जो मुझे समझता,
सिर्फ मै ही समझूँ ऐसा कब तक कर पाऊँगा |

मै भी इंसान ही हूँ दर्द मुझको भी होता है,
आखिर कब तक मै अकेले सहन कर पाऊँगा |

रोज काम करके थकान मुझे भी होती है,
रातों मे करवटे बदल कब तक गुजार पाऊँगा |

जीना आसान नही फिर भी कोशिश की,
इससे बेहतर ज़िंदगी मै क्या ही बना पाऊँगा |

मैं अपने गम छूपाकर मुस्कुराना सीखा है,
ज़िंदगी मे इससे ज्यादा कैसे मुस्कुरा पाऊँगा |

बड़ी मुश्किलो से फिर खुद को तलाशा है,
इस बार मैं खोया तो खुद को ढूंढ नहीं पाऊंगा |

फिर मुझे कभी काश कहने का मौका न मिले

ज़िंदगी को ऐसे अंदाज से जीना चाहता हूँ,
फिर मुझे कभी काश कहने का मौका न मिले |

मेरी मंजिल जो भी हो वहाँ पहुँचने के लिए,
मै चलता रहूँगा जाने फिर मौका मिले न मिले |

उदास रहने की वजह मेरे पास भी होती है,
मै मुस्कुराता हूँ ज़रूरी नही हमेशा वजह मिले |

वो बेपरवाह लोग जो मुझे समझे ही नही है,
मैंने छोड़ दिया उन्हें जो समझना है वही समझे |

जितना होगा मै वक़्त का इस्तेमाल करूँगा,
ताकि काश कहने को फिर कुछ बाकी ना रहे |

मुझे इस दिल मे अब कोई राज नही रखने,
वो आजाद है वो चाहें अब किसी से भी मिले |

मैंने कोशिश की बांधने की नही कर पाया,
आज़ाद कर दिये रिश्ते बस जहाँ रहे खुश रहे |

मै कोशिश करता रहा सपने सच करने की,
कुछ अभी बाकी है यहाँ कई सपने पूरे भी हुए |

सिर्फ एक हार से कैसे खामोश रहता यहाँ,
एक बार कोशिश करे तो शायद जीत भी मिले |

ज़िंदगी को ऐसे अंदाज से जीना चाहता हूँ,
फिर मुझे कभी काश कहने का मौका न मिले |

बचपन का हर मंजर अच्छा लगता है

छोटी आँखों मे सपने बड़े देखना,
बचपन का हर मंजर अच्छा लगता है |

नन्हें कदम जो अभी चलना सीखें,
इन्हें तो सिर्फ दौड़ना अच्छा लगता है |

संभलकर चलने की ये उम्र नही है,
इन्हें बार बार गिरना अच्छा लगता है |

कुछ भी खरीदो वो खुश नही होते,
इन्हें सिर्फ खिलौना अच्छा लगता है |

परवाह शब्द का अर्थ नही जानते,
इन्हें बेपरवाह रहना अच्छा लगता है |

शिक्षा की जरूरत वो नही जानते,
इनको अभी खेलना अच्छा लगता है |

कल क्या होगा इसकी खबर नही,
इन्हें आज मे जीना अच्छा लगता है |

इन्हें आदत है यह हार नही मानेंगे,
इन्हें कोशिश करना अच्छा लगता है |

इनका रूठना मनाना चलता रहेगा,
फिर भी इन्हें लड़ना अच्छा लगता है |

दिन तो आज भी बेहतर होते होंगे,
पर ये बचपन सबको अच्छा लगता है |

छोटी आँखों मे सपने बड़े देखना,
बचपन का हर मंजर अच्छा लगता है |

अपनी एक कोशिश तो कर सकता हूँ मै

दुनियाँ मे हर चीज मिले या न मिले,
अपनी एक कोशिश तो कर सकता हूँ मै |

शायद जो दूर हो गये फिर ना लौटे,
पर यहाँ इंतजार तो कर ही सकता हूँ मै |

कुछ गलतियाँ भूलना मुश्किल हो,
मेरे हाथ मे हो तो माफ कर सकता हूँ मै |

क्यूँ आगे का सोच मै जिंदा रहता,
जब हरपल को आज मे जी सकता हूँ मै |

क्यूँ लोगों का सोचकर वक़्त गवाए,
जब खुद के बारे मे भी सोच सकता हूँ मै |

लोगों की पसंद नापसंद नही बनना,
जब यहाँ खुद की पसंद बन सकता हूँ मै |

लोगों की बातों से डरना छोड़ दिया,
सिर्फ वही किया मैंने जो कर सकता हूँ मै |

ज़िंदगी सफर है यहाँ मुसाफिर हूँ मै,
वजह नही है रुकने की चल सकता हूँ मै |

मुस्कराने की वजह सिर्फ मै ही बनूँ,
मौका जो भी मिलेगा मुस्कुरा सकता हूँ मै |

किसी एक तलाश को नही ज़िंदगी,
हर दिन एक नई तलाश कर सकता हूँ मै |

अपनी गलती नही छुपाना चाहता,
जब हर डर का सामना कर सकता हूँ मै |

दुनियाँ मे हर चीज मिले या न मिले,
अपनी एक कोशिश तो कर सकता हूँ मै |

जीने को एक वजह भी मिले तो काफी है

ज़िंदगी से ज्यादा ख्वाहिश तो नही,
जीने को एक वजह भी मिले तो काफी है |

मंजिल ना भी मिली अफसोस नही,
हम उस सफर पर चल भी पाये काफी है |

सारे सपने सच हो ज़रूरी तो नही,
हम इन आँखो से उन्हें देख पाये काफी है |

आँखे चाहती हमेशा देखते रहना,
मुझे एक झलक भी मिल जाये काफी है |

मुझे नही चाहिए बड़ी मुस्कुराहटें,
छोटी सी मुस्कान भी मिल जाए काफी है |

कोई देखे ना मेरी आँखो का दर्द,
मै अपने तक महफूज रख पाऊँ काफी है |

मुझे यह झूठी ज़िंदगी पसंद नही,
सच के रास्ते मुश्किले भी आये काफी है |

वो फूल मुरझा भी गया तो क्या,
वह मेरे मन को सुगंध से भरा है काफी है |

चुनौतियों के रास्ते कठिन है यहाँ,
यहाँ खुद को बेहतर बना पाया काफी है |

मै जितना लिखूँ कम ही लगता है,
हाँ अब तक जितना लिख पाया काफी है |

ज़िंदगी से ज्यादा ख्वाहिश तो नही,
जीने को एक वजह भी मिले तो काफी है |

क्या इस ज़िंदगी का हिसाब दे पाओगे

हर एक चीज का हिसाब रखने वाले,
क्या इस ज़िंदगी का हिसाब दे पाओगे |

वक़्त को बेवजह चीजों मे गवा दिये,
वो वक़्त अब सही चीजों मे दे पाओगे |

जो खुशी पल छोड़ आगे निकले थे,
फिर कभी उन्हीं पलों से मिल पाओगे |

जिस दहलीज को तुमने लाँघ दिया,
उसको फिर एक बार पार कर पाओगे |

सालों पुराना रिश्ता तोड़ दिया तुमने,
क्या तुम पहले जैसा उसे जोड़ पाओगे |

एक ख्वाब को कई ख्वाब तोड़े तूने,
क्या वापस आ तुम उन्हें जोड़ पाओगे |

कितने खत लिखे जबाब नही दिया,
क्या कारण था कोई वजह दे पाओगे |

कोई है तेरी वजह से बहुत रोया था,
क्या उस शक्स के आँसू पौंछ पाओगे |

तेरी बातें कांटे बन दिल पर लगी है,
क्या तुम उस कांटे को निकाल पाओगे |

जो तुने किया है तेरे साथ कोई करे,
क्या तुम सच मे उसे माफ कर पाओगे |

हर एक चीज का हिसाब रखने वाले,
क्या इस ज़िंदगी का हिसाब दे पाओगे |

बेखबर ये हवाएं बेखौफ बहती है यहाँ

बेखबर ये हवाएं बेखौफ बहती है यहाँ,
अपनी ज़िंदगी तू कुछ इसी तरह से बना ले |

ना मंजिल इसकी न इंतजार किसी का,
चलते रहना ही ज़िंदगी का मकसद बना ले |

ना रंग है न रूप ना कोई भेद है इसका,
खुद को तू जमाने मे इस तरह से मिला ले |

वक़्त के साथ बदलना यही खासियत,
परिवर्तन को यहाँ खुद को काबिल बना ले |

वक़्त आता है जब ये भी खामोश रही,
लंबे इंतजार को तू खुद को लायक बना ले |

मुश्किल है इन्हें फिर भी ये गुजरती रही,
इनकी तरह खुद को इतना बेखौफ बना ले |

इसके एहसास ही मुस्कुराहट दे जाते है,
खुद को किसी मुस्कुराहट की वजह बना ले |

बारिश की भीगी ठंडी हवाओं के जैसे,
तू अपनी बात से ऐसे ही लोगों को भीगा दे |

तू बना ही नही एक जगह ठहरने को,
आसमान के परिंदे तू खुद को थोड़ी हवा दे |

मुश्किल रास्ते पर चलना ही खासियत,
डर से लड़ने को तू खुद को मजबूत बना ले |

बेखबर ये हवाएं बेखौफ बहती है यहाँ,
अपनी ज़िंदगी तू कुछ इसी तरह से बना ले |

आज की लड़की हवा मे उड़ना जानती है

पिंजरे मे कैद थी वो वक़्त गुजर गया,
आज की लड़कियाँ हवा मे उड़ना जानती है |

एक वक़्त था जब हर जुर्म सहे उसने,
अब वह लड़कियाँ इंसाफ मांगना जानती है |

समाज जिन्हे चूड़ियों मे बाँधे रखा था,
कमजोर नही वो मुक़ाबला करना जानती है |

वो वक़्त पहले था जब इन्हें गिना नही,
आज वो हर एक जगह हिस्सेदारी मांगती है |

उसके सवाल जो दबा दिये समाज ने,
अब लड़की हर सवालों के जबाब मांगती है |

पहले उसे हक ना था सपने देखने का,
पर आज वह उन्हें सच करना भी जानती है |

बिन सवाल उसे गैरों को सौंप दिया था,
आज उससे भी उसकी पसंद पूछी जाती है |

जिसकी पहचान पिता या पति से होती,
आज वह खुद की पहचान बनाना जानती है |

वो कमजोर नही है बात इज्जत की हो,
वह आदिशक्ति माँ दुर्गा बनना भी जानती है |

आज लड़कियाँ माँ बाप पर बोझ नही,
वह उनके बुढ़ापे की लाठी बनना जानती है |

पिंजरे मे कैद थी वो वक़्त गुजर गया,
आज की लड़कियाँ हवा मे उड़ना जानती है |

जीने का ये हुनर बड़ी मुश्किल से सीखा है

एक उम्र गुजार दी इस अनुभव को मैंने,
जीने का ये हुनर बड़ी मुश्किल से सीखा है |

हर मौसम जो बागों मे सदाबहार रहा है,
मुस्कुराने का ये हुनर मैंने फूलों से सीखा है |

जो उफानी लहरों मे भी शान्त रहता है,
खामोशी का हुनर मैंने सागर से सीखा है |

बिना रास्ता भटके बस चलती रहती है,
चलने का हुनर मैंने इन हवाओं से सीखा है |

बारिश सब पर समान रूप से गिरती है,
सब मे मिल जाने का हुनर बूंदो से सीखा है |

जो पेड़ सिर्फ दूसरों को छावँ देते आये,
लोगों के लिए दया भाव मैंने उनसे सीखा है |

बारिश की सिर्फ बूंद को जो प्यासी है,
इंतजार का ये हुनर मैंने जमीन से सीखा है |

रुकना नही यहाँ मुश्किले आती रहेंगी,
डटे रहने का ये हुनर मैंने पहाड़ो से सीखा है |

मै हारा था शायद कुछ कमी रही होगी,
बेहतर बनने का हुनर इसी हार से सीखा है |

कुछ भी लिख पाना मेरे बस मे नही है,
जो भी लिख पाया सब आप ही से सीखा है |

एक उम्र गुजार दी इस अनुभव को मैंने,
जीने का ये हुनर बड़ी मुश्किल से सीखा है |

जब ज़िंदगी आज और इसी वक़्त मे है

क्यूँ फिक्र है उस आने वाले कल की,
जब ज़िंदगी आज और इसी वक़्त मे है |

क्यूँ इंतजार हो किसी बड़ी खुशी का,
छोटी सी मुस्कुराहटें हर एक कदम मे है |

क्यूँ सोचे हम जन्मो के इस बंधन का,
जब तेरा साथ आज और इसी पल मे है |

मुझे कहानी लिखने का इंतजार नही,
जब मेरे शब्द कलम कागज यही पर है |

भविष्य मे कुछ पाने का सोचें ठीक है,
अपने आज को गवाना कहाँ ये ठीक है |

मौका मिले खास दोस्त से मिलने का,
अगर आप मिल पाए तो दिन बेहतर है |

कोई अपना मुश्किलों मे है आजकल,
मदद कर पाये बेशक फिर हम ठीक है |

कोई इंतजार मे बैठा हुआ है आपके,
आप उन्हे मिले तब आप खुशनसीब है |

जब कोई ज़िंदगी से कोई हार गया,
उसे जीने वजह दी तो मेरे शब्द ठीक है |

ज़िंदगी कल मे है सिर्फ एक धोख़ा है,
ज़िंदगी हमेशा से यहाँ हर एक पल मे है |

क्यूँ फिक्र है उस आने वाले कल की,
जब ज़िंदगी आज और इसी वक़्त मे है |

बस मेरे ये रास्ते बदलते रहते है

यहाँ मेरी मंजिल एक ही थी,
बस मेरे ये रास्ते बदलते रहते है |

मेरी आँखे पहले जैसी ही है,
पर इनमें ख्वाब बदलते रहते है |

मैंने आज भी बातें वही कही,
पर बोलने के अंदाज बदलते है |

रिश्ता वही है जो पहले से है,
बस दिल के जज्बात बदलते है |

प्रेम की परिभाषा भी वही है,
पर इजहार के तरीके बदलते है |

हाल ए दिल आज भी वही है,
सिर्फ पूछने वाले लोग बदलते है |

बातें कर हल निकाल लेने से,
कहाँ दूरियों से हम बच सकते है |

हवाएं यहाँ वैसी है जैसी थी,
यहाँ इनके रुख बदलते रहते है |

वो दोस्ती से कुछ ज्यादा थी,
वक़्त के साथ ये रिश्तें बदलते है |

इंसानी रूह सिर्फ एक ही है,
वक़्त के साथ जिस्म बदलते है |

यहाँ मेरी मंजिल एक ही थी,
बस मेरे ये रास्ते बदलते रहते है |

मेरी ये ज़िंदगी एक काहानी है

मेरी ये ज़िंदगी एक काहानी है
मै जिसपे किताब लिखना चाहता हूँ|

किसी का ख्वाब बनना है मुझे,
वही किसी की याद बनना चाहता हूँ|

नदियों की तलाश जहाँ खत्म हो,
मै वो गहरा समंदर बनाना चाहता हूँ|

दुनियाँ के रास्ते उलझाते है मुझे,
मै अपने रास्ते खुद बनाना चाहता हूँ|

किसी की आँखो की पहेली बना,
तो किसी के जबाब बनना चाहता हूँ|

जहाँ ज़िंदगी मेरी एक कहानी है,
मै जिसका किरदार बनना चाहता हूँ|

ज़िंदगी मे कुछ सपने पूरे करने है,
वही कुछ अधूरे छोड़ देना चाहता हूँ|

सीखना है कुछ संगीत से मुझको,
वही कुछ बोल मै लिखना चाहता हूँ|

यहाँ सालों से प्यासी जमीन थी,
उसके लिए बारिश बनना चाहता हूँ|

मुझे वो उदास आँखे पसंद नही,
मै सिर्फ मुस्कुराहट बनना चाहता हूँ|

वो जो जुबान यहाँ खामोश रही,
मै उसकी आवाज बनना चाहता हूँ|

वो दर्द जो प्यार मे मिलता यहाँ,
मै उस दर्द महसूस करना चाहता हूँ|

मेरी ये ज़िंदगी एक काहानी है
मै जिसपे किताब लिखना चाहता हूँ|

तो इसमें गलत क्या है

ज़िंदगी के इस सफर मे,
साथ कुछ कदमों का भी हो,
तो इसमें गलत क्या है |

धूप मे चल रहा अरसे से,
कहीं ये छाँवो मिल भी जाये,
तो इसमें गलत क्या है |

रोने की वजह तो बहुत है,
तो बेवजह मुस्कुरा लिए हम,
तो इसमें गलत क्या है |

बिछड़ जाना है एक दिन
जब तक साथ है जी लिए है,
तो इसमें गलत क्या है |

वो मिलते नही आजकल,
कभी एक झलक मिल जाए,
तो इसमें गलत क्या है |

मेरी आदते खराब है पर,
इनसे चेहरे पर मुस्कान आये,
तो इसमें गलत क्या है |

हर बात कही नही जाती,
कभी ये नजरे भी पढ़ी जाए,
तो इसमें गलत क्या है |

मुझे ठोकर लगी गिर गया,
गिरकर ही संभलना आ जाए,
तो इसमें गलत क्या है |

प्यार मे ये दिल टूट जाते है,
इस वजह से हम बिखर जाए,
तो इसमें गलत क्या है |

कोशिशें यहाँ मैंने पूरी की,
कभी हम नाकाम हो भी जाए,
तो इसमें गलत क्या है |

ज़िंदगी के इस सफर मे,
साथ कुछ कदमों का भी हो,
तो इसमें गलत क्या है |

कुछ नही बस उम्र का तकादा है साहब

कुछ नही बस उम्र का तकादा है साहब,
अच्छा ही है अब इन आँखो कम दिखता है |

बचपन छाती तान चलकर गुजारा मैंने,
अब तो हमे लाठी का सहारा लेना पड़ता है |

आँखो से दूर तक देखने की शर्त लगाते,
अब तो इन्हें चश्मे का सहारा लेना पड़ता है |

बच्चों को जब वक़्त देना था नही दे पाये,
अब पलभर देखकर ही मन भरना पड़ता है |

एक उम्र गवा दी पैसा कमाते कमाते मैंने,
कोई पैसों से कैसे खुशियाँ खरीद सकता है |

अब थोड़े रास्ते पर थकान होने लगती है,
बिन लाठी के चलना अब मुश्किल लगता है |

शायद आज के बच्चे समझदार लगते है,
हमारा तो हर नजरियाँ उन्हें पुराना लगता है |

जिन बच्चो ने हाथ थाम दुनियाँ देखी है,
उन्हे तो मेरा साथ चलना ही परेशां करता है |

समाज मे हर दिन बढ़ रही नग्नता देखी,
अब यहाँ शर्म से मेरा हर दिन सर झुकता है |

सिर्फ झूठ नफरत दिखती है चारो ओर,
मैंने रिश्तों को पैसों से तुलता हुआ देखा है |

कुछ नही बस उम्र का तकादा है साहब,
अच्छा ही है अब इन आँखो कम दिखता है |

पर हमेशा इनमें कुछ अधूरा रह जाता है

मै अपनी चाहें जितनी कोशिश कर लूँ,
पर हमेशा इसमें कुछ अधूरा रह जाता है |

ये दिमाग हमेशा कुछ और कहता है,
जबकि दिल कुछ और कहना चाहता है |

बातें इन लवो पर आकर रुक गयी है,
क्यूँ तुम्हारे सामने ये खामोश हो जाता है |

मैंने मुश्किलों से रोशनी की थी वहाँ,
तभी ये सूरज अचानक निकल आता है |

जाने कब से बस चल ही रहा था मै,
मंजिल से पहले रास्ता खत्म हो जाता है |

जब भी कोई मेरे करीब आने लगा,
यहाँ हर बार वही इंसान दूर हो जाता है |

मै सपने के करीब था बस एक बांधा,
एक बार फिर मेरा इंतजार बढ़ जाता है |

यादें जिन्हे मै अब भूलने ही लगा था,
एक ठोकर वापस सब याद आ जाता है |

मै दुनियाँ से लड़ता और जीता भी,
कई बार इंसान अपनो से हार जाता है |

मैंने जितना बांधने की कोशिश की,
कुछ तो है जो हमेशा से छूट ही जाता है |

मै अपनी चाहें जितनी कोशिश कर लूँ,
पर हमेशा इसमें कुछ अधूरा रह जाता है |

दिल मे बातों का दरिया बन रखे है

दिल मे बातों का दरिया बना रखा है,
और यहाँ लोग कहते है की खामोश हूँ मै,

शायद मेरे होठ हर जगह नही चलते,
सबके के बीच मे एक सवाल बना हूँ मै,
शायद वो मुझे जानते ही नही अभी,
उनसे भी कही ज्यादा बातें करता हूँ मै |

अगर आस पास लोग मेरे जैसे हो,
देखना फिर कितनी बातें करता हूँ मै,
ये मुझसे ज्यादा दूर नही रह पाएंगे,
जल्द ही उन्हे अपना बना लेता हूँ मै |

ये किताबें बेशक खत्म हो जायेगी,
ज़िंदगी के बेहतर अनुभव पढ़ता हूँ मै,
किताबों के पन्ने खाली है तो क्या,
जब मौका मिला उन्हें भर सकता हूँ मै |

बारिश की एक बूंद जैसे दिखती है,
शायद हर किसी को ऐसा लगता हूँ मै,
पर जब वो बूंदे एक साथ गिरती है,
उन सारी बूंदो की वही आवाज हूँ मै |

हाँ, मेरा नाम प्रशांत है, जो सागर है,
जिसकी मर्यादा है उसी मे रहता हूँ मै,
पर खामोश वो सागर भी कहाँ रहा,
हर लहर से आने वाली आवाज हूँ मै |

बेशक शब्द कम हो पर बेहतर हो,
कुछ ऐसी ही बातें कहना चाहता हूँ मै,
एक बार कोई सुने बार बार दोहराए,
कुछ ऐसी कविता कहना चाहता हूँ मै |

मुझे चेहरों पर मुस्कुराहट पसंद है,
उसके लिए अच्छे विचार सोचता हूँ मै,
ये थकान और गुस्सा कम करते है,
तभी तो कुछ अच्छा लिख पाता हूँ मै |

मै तलाश करता हूँ खास मौके की,
एक बार खुद को साबित कर सकूँ मै,
मुझे विश्वास है वो एक दिन आयेगा,
जब महफ़िल-ए-खास बन जाऊँगा मै |

कोई चाहें जितना भी दूर हो मुझसे,
पर उनकी बातों मे आज भी जिंदा हूँ मै,
वक़्त की बात है मै आज खामोश हूँ,
वर्ना कहाँ कभी इतना खामोश रहा हूँ मै |

वक़्त आज नही तो कल बदल देंगे,

जीने का अंदाज बदलना जानता हूँ मै,
कोई मुझे कब तक कैद रखेगा यहाँ,
ऐसी जंजीरो को तोड़ना जानता हूँ मै |

पर मै खुश रहने के बहाने बना लेता हूँ

बेशक कई गम रहे यहाँ ज़िंदगी मे,
पर मै खुश रहने के बहाने बना लेता हूँ|

कोई गया तो जाने दो क्यों रोकना,
मै किसी के आने का जश्न मना लेता हूँ|

कोई साथ हो रास्ते अच्छे लगते है,
पर मै तो तन्हा भी रास्ते गुजार लेता हूँ|

दुःखी लोग दर्द को दर्द समझते है,
मै अपने हर दर्द का मर्ज बना लेता हूँ|

मुझे बस बेहतर होते जाना है यहाँ,
मै जैसा पहले था आज भी वैसा ही हूँ|

लोग मुझे चाहते है परवाह है मेरी,
मै भी उन्हें सच मे बेहद प्यार करता हूँ|

सच की ज़िंदगी आसान लगती है,
तभी चेहरे पर मुस्कुराहट रख पाता हूँ|

लोग एक हार से निराश हो जाते है,
मै तो मेरी हार पर भी मुस्कुरा लेता हूँ|

ज़िंदगी के ये रास्ते खत्म नही होते,
मै तो रोज एक नया रास्ता बना लेता हूँ|

मान सम्मान का मोह छोड़कर यहाँ,
अंदाज अपना मस्त मलंग बना लेता हूँ|

बेशक कई गम रहे यहाँ ज़िंदगी मे,
पर मै खुश रहने के बहाने बना लेता हूँ|

ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो छुट ही जायेगा

आज जो करना चाहता था कर नही पाया,
ये दिन महीना और साल ऐसे ही गुजर जायेगा,
मै इस ज़िंदगी मे चाहें कितनी कोशिश करूँ,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

तुम दूसरों को खुश करने मे इतना लगे होना,
तुझे खुश करे ऐसा शायद ही कोई मिल पायेगा,
कहाँ हमेशा वही मिलता है जो हम चाहते है,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

खास चीजें करीब आकर मुझसे दूर हो गयी,
आखिर किस्मत से कोई कैसे यहाँ लड़ पायेगा,
हमेशा सब कुछ कहाँ किसी को भी मिला है,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

ज़िंदगी है मैंने सपने मे भी नही सोचा था की,
यहाँ मंजिल के साथ ये रास्ता भी बदल जायेगा,
अफसोस क्या करना मै तो बस चलता रहूँगा,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

ज़िंदगी मे हम कितने बड़े बड़े सपने देखते है,
नही सोचा वो पलभर मे टूट कर बिखर जायेगा,
मै फिर एक सपने की तलाश शुरू करता हूँ,

ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

ज़िंदगी मे पहली बार कोई मेरे करीब आया,
नही सोचा वो एक पल मे इतना दूर हो जायेगा,
उसने मुझे प्यार के बेहतर अनुभव सिखाये,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

मुझे लोगों की मुस्कान की वजह बनना था,
पर ये कुछ लोगों के लिए मुसीबत बन जायेगा,
इन लोगो की सोच मै आखिर कैसे बदलता,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

बेशक तेरा किरदार उस चाँद के जैसा होगा,
उस किरदार मे चाँद की तरह दाग लग जायेगा,
ये ज़िंदगी है जब तक बेपरवाह होकर जियो,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

तुम तो जोड़ने निकलोगे ये दुनियाँ तोड़ देगी,
तू हर कोशिश मे टुकड़ो के जैसे बिखर जायेगा,
इस दुनियाँ को नही तू बस खुद बेहतर बना,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

यार छोड़ अब पिछली बातों मे क्या रखा है,
वर्ना इन बातों मे तेरा आज भी निकल जायेगा,
अब क्या होगा तुझे परवाह इसकी करनी है,
ज़िंदगी मे कुछ न कुछ तो यहाँ छुट ही जायेगा |

मेरे ये कदम तो सिर्फ चलना जानते है

इन्हें रास्तों पर रुकना आता ही नही,
मेरे ये कदम तो सिर्फ चलना जानते है |

मंजिल अभी दूर है सफर है कठिन,
ये हर एक मुश्किल से लड़ना जानते है |

इन पाँव मे मेरे बेशक कुछ छाले हो,
मेरे जख्म मिट्टी को अपनी माँ मानते है |

जो मै रुका तो खुद को उदास पाया,
मेरे तो रास्ते ही यहाँ मेरी मुस्कुराहटें है |

वैसे तो बहुत लोग मिलते है सफर मे,
कुछ है जो हमेशा की याद बन जाते है |

बहुत कुछ इन रास्तो मे खो दिया मैंने,
कुछ पाने को क्यों ना आगे बढ़ जाते है |

मौसम है बारिश तो होगी ही क्यूँ रुके,
इस बार भीगने को तैयार हो ही जाते है |

अगर रास्ते खराब हुए हम बदल देंगे,
मेरे मजबूत इरादे रास्ते बनाना जानते है |

कई बार इस मैदान मे ये रेस हारा मै,
ये आखिर तक कोशिश करना जानते है |

आखिरी उम्मीद तक इंतजार करूँगा,
मेरे कदम मंजिल तक पहुँचना जानते है |

इन्हें रास्तों पर रुकना आता ही नही,
मेरे ये कदम तो सिर्फ चलना जानते है |

बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ

मुस्कुराने को वजह जरूरी नही,
हर बार मै नये बहाना बना लेता हूँ,
ज़िंदगी मे ये सब चलता रहेगा,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ|

मेरे जीने के तरीके थोड़े अलग है,
हर किसी को खुश नही कर सकते,
जिनकी पसंद हूँ वो तो खुश है न,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

क्या हुआ अगर मै हार भी गया,
वो जीत भी एक दिन मिल जायेगी,
शायद एक हार भी ज़रूरी होगी,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

क्या हुआ अगर कुछ खो गया है,
शायद मेरे लिए वो ज़रूरी नही था,
शायद किसी और किस्मत मे हो,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

कभी करीब थे आज वह दूर है,
रिश्ते फांसलो से तय तो नही होते,
मेरे आज भी दिल के करीब है,

बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

वक़्त कितना ही बुरा क्यूँ न हो,
कुछ वक़्त बाद वह गुजर जाता है,
शायद कुछ अच्छी शुरुआत हो,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

मै मुस्कुराने की वजह बनने को,
मै हर वजह मे शामिल हो जाता हूँ,
मेरे दिल को सुकून देता है शायद,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

वो एक ख्वाब आँखो ने देखा था,
वो ख्वाब भी पलभर मे ही टूट गया,
मेरे लिए कभी था ही नही शायद,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

मै अक्सर रास्ते पर रुक जाता हूँ,
ऐसा नही की थकान ने कदम रोके,
कोई आने वाला है इन रास्तो पर,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ,

यहाँ कोई किसी से दूर नही हुआ,
किस्मत ने ही उनके रास्ते मिलाये है,
मिलने को बिछड़ना होता है शायद,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ|

बेशक ज़िंदगी मे मुश्किलें आई है,
मै हमेशा हिम्मत के साथ खड़ा रहा,
जीने को लड़ना पड़ता है शायद,
बस यही सोच कर मुस्कुरा लेता हूँ|

मै अपना सारा वक़्त लोगोँ के लिए गवां दिया

मै अपना सारा वक़्त लोगोँ के लिए गवां दिया,
मैंने मेरे हिस्से की ज़िंदगी को कभी जिया ही नही |

मेरे सारे रास्तों को अब तक औरों ने ही चुना है,
मै अपने रास्ते चुनता ऐसा मौका कभी मिला नही |

मैं अपनी ज़िंदगी को इतने टुकड़ो मे बाँट दिया,
ये मेरे हिस्से का टुकड़ा और मेरे लिए ही बचा नही |

गलती मेरी थी हर बार दिल मै ही लगाता रहा,
शायद जैसे यहाँ मुझसे किसी ने दिल लगाया नही |

मेरा किरदार ऐसा है मै सबसे प्यार करता रहा,
शायद मेरे हिस्से का प्यार कभी वापस आया नही |

मै यहाँ लोगों की बातें खामोशी से सुनता रहा,
जो मेरी खामोशी सुन पाता ऐसा कोई मिला नहीं |

अब महीनो गुजर जाते है दोस्तों से मिले हुए,
बेहद वक़्त गुजर गया मै खुलकर मुस्कुराया नही |

जिम्मेदारियों के भंवर मे मै ऐसा फंस गया हूँ,
कितना समय हो गया मै यहाँ से निकल पाया नही |

कितना वक़्त हो गया मैंने ये आईना नही देखा,
जो पहले दिखता था वो चेहरा नजर आता ही नही |

मुझे ज़िंदगी मे जो भी मिला मेरे लिए काफी है,
परवाह नही है अब मेरे हक का मुझे मिला या नही |

मै अपना सारा वक़्त लोगोँ के लिए गवां दिया,
मैंने मेरे हिस्से की ज़िंदगी को कभी जिया ही नही |

ये मेरी ज़िंदगी है किसी की जागीर थोड़ी है

जमाने का मै खुद को गुलाम बना दूँ,
ये मेरी ज़िंदगी है किसी की जागीर थोड़ी है |

मै मेरा दिल किसी खास को ही दूंगा,
मेरा दिल है सड़क चलता आवारा थोड़ी है |

मै लिखता रहूँगा जब तक दिल करे,
ये हाथ खुला है वो जंजीरो से बंधा थोड़ी है |

हम कैसे इस किरदार बेहतर बता दे,
ये किरदार अभी अधूरा है वो पूरा थोड़ी है |

ज्यादा बोलना कोई समझदारी नही,
मेरा हर जगह बोलना ऐसा जरूरी थोड़ी है |

मै सही लोगों के आगे झुक जाता हूँ,
गलत जगह झुके ऐसा स्वाभिमान थोड़ी है |

मुश्किल से खुद को ऐसा बना पाया,
बार बार बदले मेरी ये ऐसी आदते थोड़ी है |

तन्हा सफर बेहतर है फिर भी रुका,
वर्ना यहाँ मुझको रुकने की आदत थोड़ी है |

यहाँ मेरे लिए थोड़ी रोशनी काफी है,
मुझे जमाने की इस चमक आदत थोड़ी है |

मेरा ये रब मेरे दिल और मेरे मन मे है,
उसे जमाने में ढूंढे मेरा दिल दीवाना थोड़ी है |

जमाने का मै खुद को गुलाम बना दूँ,
ये मेरी ज़िंदगी है किसी की जागीर थोड़ी है |

उसने आँखे भी धोयी और चश्मा भी बदला है

उसने आँखे भी धोयी और चश्मा भी बदला है,
जमाने की धूल मे कुछ भी साफ नजर नही आता |

खुद को ऊपर उठाने मे अपनों को नीचा किये,
अब लोग बहुत है यहाँ कोई तेरा नजर नही आता |

जो तूने दिल तोड़कर अपनी दुनियाँ बसाई है,
वो दिल पत्थर है पत्थर से कोई दिल नही लगाता |

तूने ऐसी रफ्तार पकड़ी वो सब पीछे छूट गये,
अब तू क्या देखता है यहाँ कोई नजर नही आता |

तुम तो ज़िंदगी बनाने निकले वो ही रूठ गयी,
ज़िंदगी तो है पर जीने का बहाना नजर नही आता |

नादानी मे तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान रहती थी,
अब आँखो मे नमी के सिवा कुछ नजर नही आता |

अपने एक रास्ते के लिए कई साथ छोड़ दिये,
सब जान गये है अब कोई साथ चलना नही चाहता |

यहाँ तेरी ज़िंदगी अब सिर्फ एक नदी जैसी है,
इसे स्पर्श मिलेगा पर साथ कोई बहना नही चाहता |

इस घर मे भावनाएँ तेरी है तेरे अपनों की नही,
तेरे लिए स्वर्ग रहे पर वहाँ कोई रहना नही चाहता |

यहाँ तुम इस कहानी के कमजोर किरदार थे,
ऐसे किरदार की कहानी कोई पढ़ना नही चाहता |

उन्होंने आँखे भी धोयी और चश्मा भी बदला,
जमाने की धूल मे कुछ भी साफ नजर नही आता |

यहाँ भाग दौड़ वाला जमाना जब से शुरु हुआ

यहाँ भाग दौड़ वाला जमाना जब से शुरु हुआ,
लोग यहाँ रुकते तो है पर कोई ठहरना नही चाहता |

यहाँ वादों कसमों का अब सिर्फ नाम बाकी है,
लोग करते तो है पर यहाँ निभाना कोई नही चाहता |

लोग यहाँ जमाने को बदलने की बातें करते है,
पर यहाँ शुरुवात कोई खुद से नही करना चाहता |

वो लोग प्रेम की इतनी बड़ी बड़ी बातें करते है,
यहाँ वही प्रेम अपनी भाषा में दिखाना नही चाहता |

गलती उसकी थी और गलती हम भी करते है,
यहाँ दिल दुसरों की गलती माफ करना नही चाहता |

दुनियाँ मे ये इंसान इंसानियत की बातें करते है,
समय पर कोई भी इंसानियत दिखाना नही चाहता |

यहाँ ये लोग जब से नकली चश्मा पहनने लगे,
वे यहाँ अब असल चेहरे को देखना ही नही चाहता |

दुनियाँ जब से विज्ञान और गजेट्स की हुई है,
वो संस्कारों की बातें कोई समझना ही नही चाहता |

इन लोगों को जब से दौड़ने की आदत लगी है,
इस खूबसूरत रास्ते पर भी कोई चलना नही चाहता |

ज़िंदगी गुजर गयी लोगों को जीना नही आया,
जीने के ऐसे तरीकों कोई सीखना भी नही चाहता |

यहाँ भाग दौड़ वाला जमाना जब से शुरु हुआ,
लोग यहाँ रुकते तो है पर कोई ठहरना नही चाहता |

हमारी भाषा हमारी संस्कृति की पहचान है

हमारी भाषा हमारी संस्कृति की पहचान है,
हमे अब इसके गिरते हुए स्तर को बचाना होगा |

यहाँ हमने माना वक़्त तेजी से बदल रहा है,
पल पल होने वाले बदलावों को अपनाना होगा |

यहाँ तुम चाहते हो कोई हमारा सम्मान करे,
मुझे पहले वो शब्द अपनी भाषा मे लाना होगा |

जहाँ महिलाएं पूजनीय है उसी का अनादर,
पहले बस कुछ शब्दों पर अंकुश लगाना होगा |

ये भाषा कभी किताबो से नही सीखी जाती,
मुझे इन अनुभवों को ज़िंदगी मे उतारना होगा |

कौन छोटा है कौन बड़ा भाषा नही जानती,
अलग नही सिर्फ एक भाषा को अपनाना होगा |

झूठ ईर्षा द्वेष जैसे शब्दों को त्याग कर हम,
ये प्रेम सत्य दया जैसे शब्दों को अपनाना होगा |

यहाँ कठोर वाणी से लोग हमेशा दूर रहते है,
हमें अपनी भाषा को थोड़ा सरल बनाना होगा |

हमारे शब्द ऐसे हो की लोग बार बार दोहराये,
शब्द महान नही थे हमे इन्हें महान बनाना होगा |

हमारे एक शब्द से चेहरे पर मुस्कुराहट आये,
अपनी भाषा मे सिर्फ ऐसे शब्दों को लाना होगा |

हमारी भाषा हमारी संस्कृति की पहचान है,
हमे अब इसके गिरते हुए स्तर को बचाना होगा |

जमाने ने मारा है या ये जज्बात खुद मर जाते है

जमाने ने मारा है या ये जज्बात खुद मर जाते है,
जमाने की सिर्फ एक चोट मे कैसे लोग बदल जाते है |

कोशिश यहाँ सबने की है ऐसा नही ये घबराते है,
लोग कोशिशों से नही अपनी किस्मत से हार जाते है |

यहाँ लोग जब अपने दिमाग से चले सही था सब,
मुश्किलें बढ़ी थी जब ये दिल की बातों मे आ जाते है |

यहाँ वो किरदार साफ था जब तक वो पर्दे मे था,
असल मे किरदार पर जमाने भर के दाग लग जाते है |

इस दौर मे रिश्तों के लिए पैसों का पैमाना रखा है,
गरीब रिश्तें गैर तो अमीर गैर रिश्तें अपने बन जाते है |

ज़िंदगी मे हम सबने बचपन मे इतनी किताबें पढ़ी,
बात असल ज़िंदगी की हो सारी किताबे भूल जाते है |

बातें तुम साफ करना पर इंतजार ना कराना तुम,
कुछ लोग इंतजार मे यहाँ ज़िंदगी जीना भूल जाते है |

बातें कहना पर शब्दों की मर्यादा का ख्याल रखो,
कुछ लोग छोटी बातों पर रातों मे सोना भूल जाते है |

मेरे लिखे शब्द किसी किताब का कोई उधार नही,
ज़िंदगी के तमाम पल ही मुझे इनके मायने सिखाते है |

जज्बात एक दिन मे नही मरे काफी वक़्त लगा है,
वजह ये जमाना है वो लोग मजबूरी मे बदल जाते है |

जमाने ने मारा है या ये जज्बात खुद मर जाते है,
जमाने की सिर्फ एक चोट मे कैसे लोग बदल जाते है |

अगर मेरे शब्द बेहतर है तो मै बेहतर हूँ

मै क्यूँ इन लोगों के लिए बेहतर बनूँ,
अगर मेरे शब्द बेहतर है तो मै बेहतर हूँ|

मै यहाँ बेवजह की बातें क्यूँ बढ़ाता,
मै यहाँ खामोश हूँ इसलिए मै बेहतर हूँ|

आखिर कब तक कोई साथ चलता,
मै हमेशा अकेला चला था तो बेहतर हूँ|

मैंने कभी लोगों में कमी नही देखी,
खुद की कमी निखारी है तो बेहतर हूँ|

किस्मत मे लिखा किसने पढ़ा होगा,
पर मै थोड़ा लिख पाया हूँ तो बेहतर हूँ|

दुनियाँ मे हम सब अकेले ही आये है,
मै किसी को अपना पाया तो बेहतर हूँ|

यहाँ लोग गमो मे टूटकर बिखर गये,
मै उस वक़्त भी मुस्कुराया हूँ बेहतर हूँ|

मुश्किल लगता है मुझे मेरा ये सफर,
मै आसानी से गुजार दिया तो बेहतर हूँ|

काफी कुछ खोया यहाँ तक आने मे,
यहाँ खुद को बचा पाया हूँ तो बेहतर हूँ|

मुझे कहाँ पता की ये जज्बात क्या है,
अब जो इन्हे लिख पाया हूँ तो बेहतर हूँ|

मै क्यूँ इन लोगों के लिए बेहतर बनूँ,
अगर मेरे शब्द बेहतर है तो मै बेहतर हूँ|

चलो हमराही अब साथ चले

मै भी राही तू भी राही,
चलो हमराही अब साथ चले |

थोड़ा बैठे किनारों पर,
या फिर दरिया के पार चले |

पत्थर फैले रास्तो पर,
मिले इन राहों को साफ करे |

बदलाव होगा चाहें तो,
पहले हम एक शुरुवात करे |

विश्वास वाली नीव रखे,
तब मजबूत ये इमारत बने |

हम पीछे जमाना आगे,
क्यूँ ना समय के साथ चले |

कहानी हमारी अपनी है,
क्यूँ ना बेहतर किरदार लिखे |

कुछ वक़्त खामोश बैठे,
कभी दो पल की बात करे |

कुछ यादें आज बनाये,
वही कुछ पिछली याद करे |

ये सारे गम दूर हो जाए,
जो हम हंस कर साथ चले |

मै भी राही तू भी राही,
चलो हमराही अब साथ चले |

बाकी अब दुनियाँ मे हर चीज बिकती है

यहाँ आप सिर्फ सही कीमत लगाइये,
बाकी अब दुनियाँ मे हर चीज बिकती है |

ये दुनियाँ बेईमानी से इतनी बेबस है,
अब यहाँ ईमानदारी हर जगह बिकती है |

झूठ इतना संपन्न हुआ है इस दौर मे,
अब सच की आवाज हर जगह दबती है |

अब दिलों मे जज्बात बचें ही कहाँ है,
ऐसे दौर मे मोहब्बत हर रोज बिकती है |

एक दौर था शिक्षा का दान होता था,
अब तो शिक्षा अच्छे दामों मे बिकती है |

अब इस दौर मे इंसाफ नही मिलता,
अब ये सजा सिर्फ गरीबों को मिलती है |

वे दौर था वैध अपना धर्म निभाते थे,
अब तो कीमत है तभी ये जान बचती है |

नारी के सम्मान की सिर्फ बातें बड़ी,
ये वैश्या बाजारों मे आज भी बिकती है |

वहाँ संविधान भी खत्म हो जाता है,
जब आपके एक वोट की चोरी होती है |

बस जाति धर्म मे लोगों को बाँटकर,
यहाँ हर दिन अब इंसानियत बिकती है |

यहाँ आप सिर्फ सही कीमत लगाइये,
बाकी अब दुनियाँ मे हर चीज बिकती है |

मै अपनी बनाई ठोकर से खुद को गिरा बैठा

इस जमाने मे कहाँ दम जो मुझे गिरा दे,
मै अपनी बनाई ठोकर से खुद को गिरा बैठा |

ये जमाना हमेशा मेरे विपरीत ही रहा है,
ये गलती मेरी थी जो मै इसे अपना मान बैठा |

मैंने नही जाना पत्थर और दिल मे फर्क,
गलती थी मै अपना दिल पत्थर से लगा बैठा |

मुझे ये उम्मीदें सिर्फ खुद से करनी थी,
गलती मेरी ही थी मै इसे दुसरों से लगा बैठा |

मुझे तो जमाने की सोच से लड़ना था,
लोगों से नही मै तो खुद से ही हार मान बैठा |

ठहरना चाहता हूँ पर नही ठहर पाता,
गलती थी मै मेरा दिल हवाओं से लगा बैठा |

मुझे इस वक़्त का अंदाजा नही हुआ,
मेरी गलती थी मै इसे गलत जगह गवा बैठा |

मै झुक गया पर गलत परिस्थितियों मे,
बस एक गलती मै मेरा स्वाभिमान गवा बैठा |

मैंने विश्वास नही रखा अपने रिश्तों पर,
एक शक और मै अपने सारे रिश्तें गवा बैठा |

सही रास्ते कठिन पर गलत आसान थे,
आसान समझ मै गलत रास्ता अपना बैठा |

इस जमाने मे कहाँ दम जो मुझे गिरा दे,
मै अपनी बनाई ठोकर से खुद को गिरा बैठा |

वक़्त तो लगता है वक़्त के साथ ढलने मे

यहाँ कुछ भी आसानी से नही बदलता,
वक़्त तो लगता है वक़्त के साथ ढलने मे |

यह जो ख्वाब आज खूबसूरत लगते है,
काफी वक़्त लगता है ऐसे ख्वाब बुनने मे |

यहाँ मेरी ज़िंदगी तो अब बेहतर हुई है,
काफी वक़्त लगा है बुरा वक़्त गुजरने मे |

कम उम्र मे अनुभव मिले आसान नही,
बचपन गवाया खुद को समझदार बनने मे |

यह प्रेम की बात कोई करता भी कैसे,
मैंने यहाँ चैन गवा दिया मोहब्बत करने मे |

वो इंसान बिन बोले मुझसे दूर हो गया,
काफी वक़्त लगा दिया उसे माफ करने मे |

आसान नही था यहाँ रास्तों पर चलना,
काफी ठोकरे लगी है मुझे यहाँ संभलने मे |

जन्म से यहाँ कोई अदाकार नही होता,
वक़्त लगा है एक बेहतर किरदार बनने मे |

ज़िंदगी के पल फुर्सत मे लिखता रहूँगा,
यहाँ वक़्त तो लगेगा एक किताब भरने मे |

यहाँ मै हर रोज कुछ नया सीख रहा हूँ,
वक़्त तो लगता है यह ज़िंदगी समझने मे |

यहाँ कुछ भी आसानी से नही बदलता,
वक़्त तो लगता है वक़्त के साथ ढलने मे |

नदी वजूद खो देती है समंदर मे मिल जाने से

उसूल बाकी है तब तक जिन्दा हो तुम,
नदी वजूद खो देती है समंदर मे मिल जाने से |

शब्द बेहतर हो तुम बोलना ना छोड़ना,
वर्ना भूल जाते है ये लोग इन्हें नहीं दोहराने से |

अगर किताबे लिखी है तो बेहतर होंगी,
ये नही लिखी गयी सिर्फ शब्दों को मिलाने से |

किरदार एक ऐसा जो हमेशा याद रहे,
कुछ तो भूल जाते है कहानी खत्म हो जाने से |

मै आज हूँ यहाँ कल तक शायद ना रहूँ,
कभी मरेगा नही मेरा किरदार मेरे मर जाने से |

मै किसी और के रास्तो पर नही चलूँगा,
मुझे जाना जायेगा मेरे अपने रास्तो के नाम से |

ठोकर लगेंगी खुद को हासिल करने मे,
यहाँ मंजिल मिलेगी पर कोशिशो के अंजाम से |

वो परिंदा भी घर अपना खुद बनाता है,
उसे परवाह नही है इन तुफानो के आगाजो से |

ज़िंदगी मे ये उतार चढ़ाव तो आते ही है,
तुम मुस्कुराहट बनना है अपने इस किरदार से |

जमीन तेरी है तो सर झुका कर चलना,
तब आसमान भी रोशन होगा तुम्हारी उड़ान से |

उसूल बाकी है तब तक जिन्दा हो तुम,
नदी वजूद खो देती है समंदर मे मिल जाने से |